REGD NO 614 A.

—काव्यांक ।

साहित्यिक एवं धार्मिक हिन्दी मासिक पत्रिका

श्रावण, भाद्रपद, सम्वत १९९८ वि० जुलाई अगस्त १९४१ ई०

ु ।
यू ॥
।

सम्पादक—

रम् ।
॥

कालीशरण त्रिपाठी सा० र०

।
॥
।
वार्षिक

रतम् ।

अखिलभारतीय संस्कृत-हिन्दी परीक्षा समिति औरैया की सूचनाएं।

प्रत्येक केन्द्रों का उचित व्यय तथा सार्टीफिकेट अगले आश्विन मास में परीक्षासमिव कार्यालय से प्रेषित किये जायंगे।

इस वर्ष के लिये फार्मोंको अक्टूवर मास के अन्ततक मंगवालेना चाहिये। नवीनकेन्द्रों शीघ्रही स्थापित करा लेने चाहिये।

शारदा पत्रिका जिन केन्द्रों में ठीकसमय पर न पहुंचे वे मंत्री को सूचित करें, याद रहे कि समिति ओर से प्रत्येक केन्द्रों को शारदा पत्रिका विनामूल्य भेजनेका प्रवन्ध किया गया है।

"संस्कृतम" साप्ताहिक अयोध्या को जो केन्द्रध्यक्ष मंगाना चाहे वे अपनी ओर से मंगावें। हां! यदि २५ छात्रोंसे ऊपर जिस केन्द्र में छात्र बैठेंगे उन्हे संस्कृतम पत्र परीक्षा समिति की ओरसे विनामूल्य दिलायाजायगा

शार[illegible] अंक में परीक्षा की त्रुटियोंपर [illegible] नारायण त्रिपाठी केन्द्राध्यक्ष क[illegible] प्रकाशित होगा

[illegible] छत्र प्रथम श्रेणी [illegible] के अध्यपिकों को सन्मान [illegible] गे।

[illegible] त्यक्रम जो वदला गया है [illegible] ाथ प्रेषित है।

[illegible] द्र के केन्द्रध्यक्ष पं० राम- [illegible] र" सा० र० के प्रार्थना पत्र [illegible] ने के बाद उन्हे सम्प्रदाय वृत्तम् [illegible] २ खण्ड-गल्पकुसुमांजलि नाम की पुस्तकें एवं संस्कृतम् कासाहित्यांक समिति-की ओर से विनामूल्य दिलाया गया। अगले वर्ष के लिये समिति की बचत के अनुसार आर्थिक सहायता की भी बात स्वीकृतकी गई।

आंध्र प्रान्त मे समिति के केन्द्रध्यक्ष पं० कर्णवीरनागेश्वर संस्कृतमनीषी प चभाषा प्रवीन के पत्रपर विचार करके उन्हे उक्त प्रान्त मे परीक्षा के प्रचार के लिये आर्थिक सहायता की आवश्यकता पर उन्हे ॥) और १) रुपया आवश्यकतानुसार परीक्षा फीस वढ़ाकर उसी प्रान्त में प्रचारार्थ व्यय केलिये अधिकार दिया गया है और तेलगु लिपि मे परीक्षा लेने की स्वीकृति भी दी गई है। —निवेदकराजेन्द्र

टा० पृ०४ सेआगे

लक्ष्मीप्रसाद वाजपेई सा०भू० जवलपुर
चन्द्र प्रकाश मुजफरपुरी
प्रयागनारायण तिवारी विरुवा
केदारनाथ झा चंद्र खडका
पं०—रामभरोसे लाल धामपुर
इन्द्रमणि प्रसाद शास्त्री रीवां
वैद्य—रामेश्वर प्रसाद रीवां
पं०—रामसुचित शर्मा मलांरस्टेट
वालकृष्ण हरि जोगलेकर वक्सनपुर
हरिमोहन मिश्र शाह आलमनगर
हरिवंश सिंह भिषगाचर्य दस्थाना
नारायण शर्मा जकाते आर्वी
राजकुमारी देवेन्द्रकुमारी अमरगढ (शेषपुनः)

मुद्रक-प्रकाशक,अध्यक्ष कमला प्रेस औरैया।
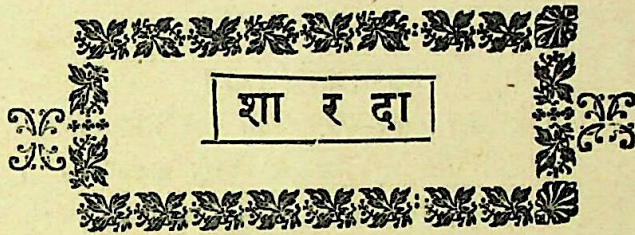
साहित्यिक एवं धार्मिक हिन्दी की एकमात्र मासिक पत्रिका

महाविद्वान् प० कालीप्रसादजी शास्त्री द्वारा प्रवर्तित।

सिद्धान्तमौपनिषदं शुद्धान्तं परमेष्ठिनः। शोणाधरमहः किञ्चिद् वीणाधरमुपास्महे॥

वर्ष ४ | औरैया, श्रावणभाद्रपदसम्वत् १९९८ वि० जुलाई, अगस्त, सन् १९४१ ई० | संख्या ५-६

मधुराष्टकम्।

अधरं मधुरं वदनं मधुरं, नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं, गमनं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥
वचनं मधुरं चरितं मधुरं, वसनं मधुरं, वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं, भ्रमितं, मधुरं मधुराधिपतेरखिल मधुरम्॥
वेणुर्मधुरा, रेणुर्मधुरः, पाणिर्मधुरः, पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं, मधुरम्॥
गीतं मधुरं, पीतं मधुरं, भुक्तं मधुरं, सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधूर, तिलकं मधुरं, मधुराधितेरखिलं मधुरम्॥
करणं मधुरं, तरणं मधुरं, हरणं मधुरं, रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं, शमितं मधुरं, मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥
गुञ्जा मधुरा; माला मधुरा; यमुना मधुरा; वीचिर्मधुरा।
सलिलं मधुरं; कमलं मधुरं; मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥
गोपी मधुरा; लीला मधुरा; युक्तं मधुरं; मुक्तं मधुरम्।
इष्टं मधुरं; शिष्टं मधुरं; मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥
गोपा मधुरा; गावो मधुरा; यष्टिर्मधुरा; सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं; फलितं मधुरं; मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतम्।

भासावतरणिका ।

चपला केतु मतंग घन, नौवत नाद गंभीर ।
नृप सों वनि„कवि जानकी, आयो पावस वीर ॥
अरी सखी ! विरहीन को, बिन निज प्रीतम प्यार ।
यह पावस कवि जानकी, होत सकार ककार ॥

—जानकी प्रसाद द्विवेदी

सूक्तिसङ्कलनम् ।

चिन्ता कापि न कार्यां निवेदितात्मभिः कदापीति ।
भगवानपि पुष्टिस्थो 'न करिष्यति लोक किंच गतिं ॥

—श्री० गु० वल्लभाचार्यः

तुभ्यं यदा यमुपदीकृत आत्मदेह, श्चिन्ता तदैव मम चिन्ता गता निरस्ता ।
दंड्यं दुनोति दयितोन निजाश्रयस्थं, किंचिच्छ्रमुस्वकु तुकी कुरुते च शिक्षाम् ॥
वेदान्तिनो यदि हसन्तु हसन्तु तैवै मां सर्वदा प्रतिकृतिं तवसेवमानं ।
ज्ञातो न नित्य निखिलात्म,भव प्रभावो, यैर्वेदविद्भि विहितानपि संहसामि ॥
सद् भोगसिद्धिरुपगच्छति पौरुषेण, मागाः सखेः स्वमिति मोह मरु भ्रमेण ।
वाल्ये त्वया किमपि कर्तु मनीश्वरेण, प्राप्त मयः कथमतां कतम श्रमेण ॥
वंशी करं सलिल मुक् सदृशं प्रकीकं, स्वर्णाम्बरं सुनयनं श्रुति कारिण कारंमृ ।
गुञ्जा गलं मुकुट वद्ध मयूर पिच्छं. कृष्ण भजे महितता ऽस्ति परंन किंचित् ॥
भक्त्या विनापि कति यान्ति तवात्म साम्यं, योगादि दुःखद पथैः परिखिद्य देहान् ।
चुद्रो यथैव धनिनः पुरतः कृपालो, संमू च्छ्र्य साधयति किन्न धनं तथाते ॥
हे तार्किका ! इह लमलं भवतां श्रमेण, चित्त प्रयातिन परत्र ममेष्ट कृष्णात् ।
मांजिष्ठ संस्कृत पठंरजकः कथंचित्, निर्णेक्तु मिच्छति सहस्र शतै रुपाग्रैः ॥
प्रजहर्थ यथा कपीश्वरं शित बाणेन, पुरा परोक्षतः ।
किमि किंचिति तदैव सांप्रतं त्वददर्शाति शरेण 'मे वधः ॥
तनु वस्त्र सुमाल्य वेणु भिंघन विद्यु द्धरि चाप चातकान् ।
अवलोकय पराजितान्न नथः पुरुदन 'वृष्टि मिषेण शोचति ॥

—पं० कुञ्जबिहारीलाल राजस्थानीयः

कवियों से।

कवि के द्वारा उत्पादित गद्य पद्य मयी रसात्मक वाक्यों की कविता संज्ञा है। कवि जितना ही मधुर, और सरल तथा आकर्षक वर्णन, आदिकवि सृष्टि निर्माता की भांति, प्रकृति की तरह नानालंकार युक्त, मधुर कल-रव संयुत, अपनी कविताको सुसज्जित करता है, उतना ही अधिक वह कविता सृष्टि सुंदरी की भांति सौन्दर्य संयुक्त कही जाती है और वही कविता प्रसंशनीय है।

कवि सृष्टि कर्ता सेभी होड़ लगाकर वन में माधुर्य्य का भी वर्णन नदियों में कमल का वर्णन रवि शशिका वर्णन, आदिअनेकों प्रकार के वर्णनों द्वारा प्रकृति पुरुष के रचेहुये जगत के मनुष्य समुदाय को ही नहीं अपितु पशु-पक्षियों को भी उसी भांति मोहित कर सकता है, जिस भांति प्रकृति के अद्भुत दृश्य देख कर प्राणीवर्ग मोहित होताहै। इतनाही नहीं कवि अपनी शक्ति द्वारा गुण को भी दुर्गुणमे परिणितकर सकता है।

अधिक जीवन की लालसा रखने वाले मनुष्य समुदायको कविअपनी वीर कविताओं द्वारा रणांगण मे जुझा सकताहै। कविवीरको लक्ष्य करके समस्त पृथ्वी को बजुल्ले का पीठ भाग, समुद्रको गोपद, पर्वत को सांपकी बामी की उपमा देकर वीरों मे सहस्रों गुना जोशभर के अद्भुत,कृत्य करवा सकता है।

कवि अपनी कविता द्वारा वीरों को भी नपुंसक बना सकता है, सच्चा कविजो चाहे सो करताहै घोर अधर्ममय युगमे गोस्वामी जी की भांति भक्ति की त्रिपथगा बहाकर जगत के कल्याण का मार्ग बताना भी कवि का हीकाम है कहनेका तात्पर्ययह है कि कवि सभी-प्रकार से अपनी कविता द्वारा जगतका उपकार और अपकार कर सकता है इसलिये कविका उत्तर दायित्व बड़ा कठिन है।

वर्तमान समय में कवियों ने अपनी २ डफली अपनी २ तान के अनुसार कविता सु-न्दरी के भव्य अङ्गको कहीं २ श्वित्र चिन्हों द्वारा भी अलंकृत कर दिया है।

हमारा यह तात्पर्य नहीं है कि वर्तमान समय में कवि है ही नहीं, होंगे पर वे बहुत कम, जितनी संख्या गिनाई जाती है उतनी नहीं। यह तो हुआ कवियोंका परिचय अब कविता कीओर चलियेआप "शारदा' केइसी काव्यांक को ही लीजिये, कितनी कविताये शुद्ध इस भाव अलंकार संयुक्त है यह विज्ञोंसेछिप नहीं सकता हमारा उद्देश्य केवलपत्रिका निकाल कर व्यर्थ में धन कमाने या यशका पुलिंदा बाधने का नहीं है हमारा ध्येय तो सत्कविता वह भी संस्कृत संश्लिष्ट हिन्दी कविता का प्रचार करना था पर आज ९वर्ष से हम जिस पथ पर पहिले आरहे थे आज भी उसी पथपर

जारहे है, खेद है कि इतने दिनों में केवल कुछ ही कवि कवि कहने के योग्य हुये। वैसे तो सहस्त्रों कवियोंकी कविनाये अबतक प्रकाशित हो चुकी है।

शारदा के कवियो से प्रार्थना है कि वे सरल सजीवसौन्दय सयुक्तअलकार सुसज्जित रसमयी कविता को रचकर एक सत्य निष्ठ पुजारी की तरह श्रंगारित करें। अपने हृद्गत भावों को थोडे और सरल शब्दों में जनताके सामने लावें। आपके सामने सभी प्रकार के उपयुक्त साधन मौजूद है चाहे जिस विषयपर एक विषयपर तन्मय होकर लिखिये। क्रन्दन, हास्य, निद्रा प्रयाण अन्त आवेग शैथिल्य विकास ह्रास आदि जो जीवन के विविधरूप है उन्हें जनता के सामने स्फुटरूप में सरल शब्दोंमें रखियेकविताकवि केसाथसारखीदृष्टि में चढके उन्नत होजयगी। किसी समय कवि अपनी शक्ति द्वारा विश्व पूज्य थे आज भी है पर बहुत कम।

कौन !

कौन राजपूतों बिना माताको व्यथा को हरे ?
डूबते स्वधर्म के जहाज को बचावे कौन ?
कौन बढ़ आगे रण-चराडी की पुकार सुने ?
प्यासीहुई कालीकी पियासाको बुझावे कौन ?
प्राण-धन-धाम-सुत-नारी डालि संकट में ?
झुकती पताका हिन्द-देश की उठावे कौन ?
पूछता"सुहावन"राजपूत; राजपूतों ही से— ?
आप बिना देश-धर्म जाति को बचावे कौन ?

राम सुहावन सिंह 'साहित्य भूषण'

श्रद्धाञ्जलि।

विश्वकवि संसार पूज्य श्रीरवीन्द्रनाथ जी ठाकुरआज इससमय स्वर्गस्थ है हमउनकीमृत्यु से क्षुभित और दुखी हैं क्यों! कि उनकी कविता द्वारा संसारका सब श्रेष्ठ स्थान उनकी कविताको तथा साथ उन्हे तथा भारतको भी प्राप्तथा वे इसदेश के बासी होतेहुये भी संसार के रत्न थे हम सब इसी लिये उनके विरवि-योग में संतप्त आत्मा से दुखी हैं। वे देशभक्त भी उच्च श्रेणीके थे उन्होने देश बाशियां के लिये भी बहुत कुछ कार्य किये है जो उनके नामके साथ ही अमर हैं। संसारिक रीतिके अनुसार हम भी उन्हे भीष्म कर्मा पितामह भीष्म की भांति अञ्जलि अर्पण करते हुये जगत पिता से प्रार्थना करते है कि दिवंगत आत्मा शांति को प्राप्त हों और उन्ही के आर्शीवाद से यह देश विश्व कवि से खली न रहे।

राधिका।

ठाढी कोलि मंदिर के द्वार पे कुमारी कीर्ति।
नौसत श्रगार किये मनके हरैया को ॥
अंग अंग भूषण सजाये जो वंचित अंग।
भाल दिये बदा द्युति भानु की हरैया को।
ओढे झीन सारी द्युति लहरकिनारी दार।
मेखला जडाऊ दिव्य लक लचकैया को ॥
मोहक मुखेन्दु अंक घूंघट न लेतो जैसे—।
डूबतो मयंक अंक लेत न तरैया को ॥

—रामदयाल झोल

ईशप्रार्थना ।

बैल चढ़ि शंकर मचावो प्रलयंकर को, गहि कै त्रिशूल-शूल देश की निकार दो ।
चक्रपाणिधारी चक्र गरुड़ सवारी मांझ, गिरिवरधारी फेरि गिरि को संभार दो ॥
अंजनिकुमार गदा जाहिर तिहार जग, भक्त सिर ताज काज भारत सुधार दो ।
जैसे घन घोर घटा फाटत समीर लगे, वाही भांति बैरिन की सेन को बिदार दो ।
भोर परी भक्त पै फरैया खम्भ पाथर के, प्रेमी प्रहलाद के बचैया प्रभु आप हो ।
सुनि कै पुकार दुःख द्रौपदी हरैया बने, खींचत में चीर के बढ़ैया पट आप हो ॥
गज उबरैया द्विज दारिद हरैया हरि, कोप सुरराज ते बचैया वृज आप हो ।
आगई समैया बिनै सुनिये कन्हैया वही, भारत की नैया के खेवैया अब आप हो ॥

पुत्तीलाल शुक्ल कविलालबिलासपुर

बंदना ।

ऋद्धि दैन वारे सुख-सिद्धि दैन वारे वर, बुद्धि दैन वारे जग जीवन सुखारे हैं ।
मोर पच्छ धारे युग नैन रतनारे भौन, कुण्डल सम्हारे गल वैजयंति वारे हैं ॥
भुक्ति मुक्ति दाता दीन दुःखियों के त्राता बल-दाऊ जी के भ्राता नंद-यशुदा दुलारे है ।
गोविन रमैया भव सिन्धु के तरैया श्याम, 'मोहन' की नैया के पार करन वारे हैं ॥

का० भू० सिंघाई मोहनचन्द्र जैन-कैमोरी सी० पी०

बिथा ।

देखा होता हृदय उसने प्रेम के नैन लाके, मैं भी देती सदय उर हो प्रान की भेट प्यारे ।
पाने जाती अहह! उसके प्रेमकी थाह मैंभी, जो मेरेही निकट अपने भावकी खू बहाता ॥
हां ! है मेरा सफल अबभी जन्मयों मानलेती, पी-पी होतीप्रणय पथको वाह! मैंभी दिवानी
पाऊँकैसे बिनय करके प्रान भी रोकठे हैं, आई आहा! नयन पथसे आँसुओं कीय धारें ॥
होजानाथा मिलन पहिलेखींचके प्रान तोभी, होजातीमैं सकल दुःखसे मुक्तथोड़े क्षणोंमें ।
हाँ ! होनाहैं बिलग जगसे औ रहेंगी यहांही, भूलैगा क्योंजिगर उसकी प्रानप्यारीबिथाको ॥
आजातीहै सुमन निबहा याद आली हठीली, होजाताहै सजल उरभी भीजके आँसुओंसे ।
सूनाहीहै ! जगत मुझको दीखता आजयोंहै, देखीहोगी बिधुरहित की रात काली अँधेरी ।
हाँ ! यों हीमैं किस तरहसे खोयदूँ येबिथाको, रोकाजाता पवन डरतो कूदताक्यों नजानूँ ।
पायाहोता अगर सहभी तो न थीबात कोई, पाऊँगी मैं यहकह सकूँ आजही याकभी भी ॥

—हिन्दी रत्न "चन्द्र" चांदोद

वास्तुविद्या ही सभ्यता की द्योतक है।

इसपूज्य भारतभूमिको शोभाशाली प्रकृति निकुञ्ज एवं इन्द्रकानन बनाने के निमित्त इसे स्वद्रस्थ निर्माण करने की चेष्टा जिस प्रकार प्रकृति देवी ने की है, उसी प्रकार जगतपति जगदाधार जगदीश्वर नेभी इसे ऐश्वर्य, कला कौशल, एवं ऐतिहास महत्ता प्रदान करने की निर्वचनीय दया कीहै। यह कथन भी अक्षरशः सत्य हीहै कि ऐतिहासिक प्रसिद्धि एव वास्तु-विद्या ही पूर्वकालीन सभ्यता का द्योतक है। आन्तरिक प्रदेशोंमें वास्तुविद्या के अपूर्व तथा अनेकानेक उदाहरण मिलते हैं, जिनमें विशेषतः मध्यभारत के अन्तर्गत इन ऐतिहासिक स्थानों की प्रचुरता है। उन्हीं स्थानों में' धारा नगरी" एक उल्लेखनीय स्थान है।

धारराज्य की राजधानी "धारानगरी" का नाम भारतवर्ष के साहित्यिक इतिहास से कदापि नहीं भुलाया जासकता।

. गते मुंजे यशः पुंजे निरालंम्बा सरस्वती मुंज राजा के अनन्तर ही सरस्वती निराश्रित हो गई। यह कहावत धारनगरी का महत्व द्योतकहै। धारका प्राचीन इतिहास प्रकाशित करनेका प्रयत्न मेरे आदरणीय माल्कमसाहब एवं कर्नल ल्यूअर्ट ने किया था। धार के साथ वैभव शाली राजवंश "परमारों" का सम्बन्ध ९ वी शताब्दीसे रहा है। परमार नरेश वैरीसिंह ने धारा को अपनी राजधानी बनायाथा मुंज वाक्पति सिंधुराज तथा भोज की छत्रछाया में तो यह स्थान भारत में विद्या का केन्द्र ही रहा था। यद्यपि यहां हिन्दू-शिल्प का बाहुल्य था, तथापि यवनाक्रमणों के कारण प्राचीन मंदिरों का अंश लाट मसजिद कमला मौला आदि मुसलमान स्थानों पर दृष्टि गोचर होता है। भोज कालीन सरस्वती मन्दिर का पता उसके निकटस्थ एक विशाल शिला पर अंकित संस्कृत नाटक से प्राप्त हुआ है। इसी राज्य में मांडु का नाम मुसलमानी राजत्व काल के इतिहास में बहुत प्रसिद्धहै। यों तो जैन धार्मिक ग्रन्थोंके आधार पर मांडवगढ एक तीर्थ क्षेत्र मनोनीत किया गया है। किन्तु हमारे प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों में भी यह 'मंडप दुर्ग के नाम से विख्यात है। यद्यपि हिन्दू-शिल्प के भग्नावशेषों पर पाठान इमा' रतें चुन दी गई हैं; तथापि इनके अवलोकन मात्र से ही स्पष्ट हो जाता है कि यहां पाठान साम्राज्य के पूर्व हिन्दू तथा जैन मंदिरों की बाहुल्यता थी येहां का किला अत्यन्त विस्तृत एवं प्रेक्षणीय है जिसमें अद्यापि विशाल इमारतें, मसजिदें, महल तथा दरगाहें विद्यमान हैं, जो पाठानयुग केनमूने हैं। हिंड़ोला महल खिलजी की कब्र, बाजबहादुर एवं रूपमती के महल आदि किलेपरकी इमारतें दर्शनीय हैं। तिरला की रणभूमि अहूर (कंचनपुर) की जैनमूर्तिया

नालछा बूढ़ी मांडू, धरमपुरी आदि स्थान की ऐतिहासिकप्रसिद्धि भी एकमात्र कर्णप्रिय है। इन्हें देखने से ही भारत की सभ्यता का पता चलता है।

यह तो मैं पूर्व ही उल्लेख कर चुका हूं। की मध्यभारत वास्तुविद्या का केन्द्र रहा है; किन्तु उसका पूर्णरूपेण वर्णनअसम्भव है। अतएव मैंने इस निबन्ध में इतिहास की अभिरुचि उत्पन्न करने के लिये केवल मोटी मोटी बातों का ही दिग्दर्शन कराया है। यों तो छोटे ग्राम भी ऐतिहासिक प्रसिद्धि से सम्पन्न है। इतिहास ज्ञान का प्रचार एवं आविष्कार करनेके लिये तथा होनहार विद्यार्थियोंको उत्साहोत्पादन के लिये यदि "मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति" मध्यभारतके ऐतिहासिक स्थानों पर एक सचित्र विस्तृत ग्रन्थ प्रकाशित करनेका उद्योग करे तो निस्सन्देह हिन्दी साहित्य में उससे एक अच्छे ग्रन्थ की वृद्धि होगी। अस्तु। यदि इस निबंध के अध्ययन मात्रसे पूर्व कथित स्थानोंको देखने की स्फूर्ति किसी को प्राप्त होगी, तभीमैं अपने इस परिश्रम को सार्थक समझूंगा।

-रामसुहावनसिंह।

अगले अङ्क की समस्यायें—

मनाइये। सबारो है।

सुधाकरोपमा।

सनातनधर्मविभूतीनां वर्णनम्।

अस्यधर्मस्य शुक्लं वै वर्णन्तद् ब्रह्मदैवतः।
ऋषिश्च परमोव्यासःग्रन्थाःवेदाःप्रकीर्तिताः॥
श्रीकृष्णस्तु परमात्मा तत्वमंत्रश्च ॐमतम्।
सत्यंशौचं दयाशान्ति स्तुर्यपादाः प्रकीर्तिताः॥
शक्तयस्त्रिविधाःप्रोक्ताःतासुकालीतिचादिमाः
द्वितीया श्रीमयीशक्तिस्तृतीयावाङ्मयी तथा॥
शिवाविष्णुर्विरञ्चिश्च त्रिविधाशक्तिदेवताः।
ब्राह्मणाद्याश्च चत्वारस्साधका परिकीर्तिताः॥
रामचन्द्रो महाराज स्सोहं वै रघुनन्दनः।
महायोगी महादेवो निर्गुणो गुणभाक्स्मृत॥
नारदश्चैव गंधर्वश्चोर्वेशी वारबालिका।
प्रह्लादश्च हरिश्चन्द्र स्तस्यादर्शौ मतौमम॥
नेता वस्यार्जुनो नूनं गाथा गीता सुधामयी।
कपिध्वजो महाधीरो योद्धा संरक्षको मतः॥
भाषाच सांस्कृती वाणी लंका मेरुर्हिमालयः।
क्षेत्रा स्तुत्रिविधाःप्रोक्ताःध्रुवंधामप्रकीर्तितम्।
नदी भागीरथी यस्य यमुना वाकिलिन्दजा।
कैलासस्तु महाशैल स्तीर्थस्तु बद्रिकाश्रमः॥
चत्वारस्तुमहापुण्यं स्तस्य भाण्डार राजयः
हंसः पद्मो पशु धेनुः गणेश श्चाधि दैवतः॥
प्रदेशो भारतस्तस्य जातिस्तु ह्यार्य रूपिणी
सनातन स्तुचाख्यावै रसंशाति सुधामयम्॥
(वाजपेयिना मधुसूदनदत्तेन स्वनिर्मित शांत गीता नामक ग्रंथादुद्धृत्य प्रकाश्यते कर्योटरा ग्रामवासिना—

परिचय ।

दृग अरबिन्द मकरंद का मलिन्द हूँ मैं सजल दृगों का मैं प्रसिद्ध कमलेश हूँ ।
चाहक चकोर से दृगों का हूँ सुधाकर मैं लालची दृगों का मंजु रसिक वृजेश हूँ ॥
दृग दुख मोचनो का सेवक हूँ किंकर हूँ अरुण दृगों का अरुणेश मैं दिनेश हूँ ।
ललित त्रिवेणी से दृगों का देव माधव हूँ सहृदय दृगों का रसिकेश विबुधेश हूँ ॥

अनुपमसुंदरी ।

अगना अटारिन सों चंद की मरीचैं कढ़ि करन छलीचैं सुकुमारी सँवरानी जाति ।
रोज की न देखि सकैं डर दुति दूजन की दीठि उनहूँ की जौलों नीकी न पिछानी जाति ॥
छुवन न पावैं आंल जौलों छवि पानिप की छलको निथाई मैं न न्हाई अनुमानी जाति ।
ताहि विबुधेश कहा लावन न आंढिन मैं छाहीं परछाहीं छूवै हवाहु की निसानी जाति ॥

—भगवतीप्रसाद रायजी (विबुधेश) दारागंज— प्रयाग

उनसे ।

विजयी हुआ कौन ! जिसको-
मिल गया समराज्य है ॥
संसार का चक्कर अनोखा-
क्या मधुर भ्रम जाल है ॥
मानव जहां के स्वार्थ बस-
है क्रूर निर्दयता भरे ॥
देखा किसी ने है कहीं पर-
बेंत पुहुमी पर फरे ॥
अपने लिये जो कर रहा-
संसार में कुछ मान हो ॥
उसका पतन हो जायगा-
देखा सुना कुछ भी नहो ॥
प्रेम की कुछ बासना- मय
क्या मधुर मुस्कान होगें ॥
प्रेम के इस प्रण मे तुमभी-
एक दिन मौन होगें ॥
विश्व की करुणा अलौकिक-
स्वप्न ही संसार है यह ॥
भूल मत जाना यहां पर-
शेष जीना दो घड़ी मह ॥
सोच लो मानव सकल ये-
काल के भी पतन होगें ॥
जो दिखे फूलते फले सब-
एक दिन वीरान होगें ॥
गर्व का अंकुर जमा तब-
काल बोला है प्रचंड ॥
नाश निश्चय होयगा यदि-
हो गया हम को घमंड ॥

—संकठाप्रसादबाजपेई।

जहां संस्कृत-राष्ट्रभाषा है।

प्रसिद्ध लेखक जान गुन्थर अपनी "इन साइड एशिया" में लिखते है' श्याम जाति के लोग इन्डोचीनी वंश में गिने जाते हैं। इसका कारण यह है कि वे भारतीयों और चीनियों के मिश्रित रक्त से उत्पन्न है। किन्तु जहां तक उनके धर्म, सभ्यता, संस्कृति तथा जीवन के रहन सहन का संबन्ध है, वे भारतीय ही अधिक ठहरते हैं। इस बात का प्रचुर प्रमाण है कि भारत में मुस्लिम विजेताओं के आगमन से पूर्व भारत और श्याम का धार्मिक सामाजिक तथा राजनैतिक सम्बन्ध प्रगाढ़ था।"

श्याम में शिक्षा तथा सैनिक सेवा अनिवार्य है। इन दोनों विषयों में वह संसार के अधिक से अधिक उन्नतिशील देशों की कोटि में लाया जा रहा है। प्रत्येक गांव और मठ में एक एक स्कूल खुला है। सरकार की ओर से इन सब स्कूलों को आर्थिक सहायता दी जाती है। प्रत्येक जिला में एक कालेज है। श्याम में कुछ विश्वविद्यालय भी हैं। श्याम की जन संख्या दो करोड़ के लग भग हैं, जिनमें ८० प्रतिशत लोग मातृभाषा में शिक्षित हैं। शिक्षित व्यक्तियों में से ६० प्रतिशत कमसे कम दो विदेशी भाषाएं अंग्रेजी और फ्रेंच अवश्यजानते हैं। संसार में श्याम ही एक ऐसादेश है, जिसने भारतीय संस्कृति तथा भारतीय परम्परा को सुरक्षित रखा है। वहां की राष्ट्र-भाषा संस्कृत है, यद्यपि उसमें किंचित परि वर्तन अवश्य हैं और वह स्थित और अवस्था के अनुकूल है। वहां की जनता वस्तुओं को उनके विदेशी नामों से कभी नहीं पुकारती। जब कभी किसी विदेशी वस्तु के सम्पर्क में यहां के लोग आते हैं, तो उसे एक नाम जो विशुद्ध संस्कृत का होता है, दिया जाता है। उदाहरणार्थ साइकिल को साइकिल न कह कर वहां के लोग उसे चक्रयान कहते है,। इसी तरह मोटर को रथ यंत्र, वायुयान को आकाशयंत्र तार को निकटलेख तथा टेलीफोन को निकट शब्द कहते है।

श्याम में एक जाति के लोग नहीं बसते उत्तर तथा उत्तरी पूर्वी भाग में 'लेओस' तथा 'थेस' जाति का निवास है, जो संख्या में ४० लाख के लग भग हैं। देश के मध्य भाग में श्यामी लोग स्वयं रहते हैं। उनकी आबादी १॥ करोड़ के लग भग है। शेष दस लाख चीनी तथा मुसलमान हैं। पर ये सभी प्रयोग संस्कृत का ही करते हैं। श्याम के लोगों के नाम भी हिन्दुओं से मिलते जुलते होते हैं। वहां के गत सम्राट का नाम वर्तमान बालक सम्राट का चाचा प्रजादीपक था, जिसे मंगोलियन उच्चारण (जैसे बंगाली बोलते हैं) के अनुसार प्रोजादीपोक या प्रोजाधिपोक बना

लिया गया। इसी प्रकार वहां के वर्तमान प्रधान मंत्री का नाम प्रोबुल सम्राट लिखा जाता है। रायटर के तार प्रोबुल सम्राट तो लिख देते हैं, पर यह नहीं बतलाते कि यह प्रधान मंत्री का नाम नहीं बल्कि उनकी उपाधि है और "प्रबल समान्त" का अंग्रेजी संस्करण है।

श्यामी शासन-व्यवस्था लोकसत्ता के आधर पर की गई है किन्तु पहिले यहां निरंकुश राजसत्ता थी। १६३२ ई० में जब जनता का दल (पीपुल्स पार्टी) प्रभुता मे था या तो राज के अधिकार बहुत कुछ सीमित कर दिए गए। श्याम के वर्तमान नरेश को अवस्था अभी केवल १५ वर्ष की है और वे १६३५ ई० में अपने चाचा सम्राट प्रजादीपक के सिंहासन त्याग के पश्चात गद्दी पर बैठे थे। नरेश एक मंत्रि परिषद की सहायता से देश का शासन करता है। जनता के प्रतिनिधियों की एक व्यवस्थापिका सभा भी होती है। राजनैतिक दृष्टि से श्याम के लोग उतने ही आगे बढ़े हैं जितने आधुनिक संसार के अन्य देशवासी।

श्याम में स्त्रियाँ उतनी ही स्वतंत्र हैं, जितने स्वतंत्र पुरुष हैं। पुरुषों के बराबर ही उन्हें शिक्षा और मताधिकार भी प्राप्त हैं। पैतृक संपत्ति में लड़कों की भांति लड़कियों को भी हिस्सा मिलता है। यहीं नहीं, स्त्रियां कौंसिलों में निर्वाचित होती हैं और सरकारी पदों पर भी काम करती हैं। वर्ण व्यवस्था तथा परदा प्रथा श्याम में बिलकुल नहीं है।

यद्यपि बहु विवाह की प्रथा श्याम में पहिले प्रचलित थी, किन्तु अब केवल एक ही स्त्री से विवाह करने के नियम का पालन किया जाता है। इसके लिये हाल ही मे एक कानून भी पास कर दिया गया है। श्याम में कन्या परिवार श्री लक्ष्मी समझी जाती है। ब्याह के समय कन्या की आयु १६ वर्ष और वर की २० वर्ष की होती है। यद्यपि वर कन्या के चुनाव में माता पिता की राय भी अधिक मानी जाती है, पर स्वयंवर तथा कन्या की राय पर भी ध्यान दिया जाता है। उनकी विवाह पद्धति भी हिन्दुओं से मिलती जुलती है और विवाह के समय वहां भी ध्रुव-तारा दिखाया जाता है।

श्याम अत्यन्त सुन्दर देश है। यहां धान की फसल बहुत होती है और संसार भर को यहां से चावल जाता है। प्रति वर्ष ४ करोड़ मन चावल तो केवल भारतवर्ष को ही भेजा जाता है। श्याम सागौन के वृक्ष भी अधिक हैं और प्रति वर्ष करोड़ों की लकड़ी बिदेशों को जाती है। टीन तथा अल्यूमिनियम भी श्याम में बहुतायत से पाया जाता है। अतएव

सम्पत्ति के लोभी योरोपियन तथा जापानी व्यापारी यहां भी धावा मारने लगे। देश को उनके आर्थिक शोषण से बचाने के लिए श्याम की सरकार ने नियम बना दिया कि कोई भी विदेशी तब तक वहां नहीं प्रवेश कर सकता, जब तक वह २४०) रूपए वहां के बन्दरगाह पर जमा न कर दे। एक मास से कम समय में जो लोग लौट जाते हैं उनका रुपया लौटा दिया जाता है।

श्याम के लोग आतिथ्य सत्कार में बिलकुल हिन्दुओं की भांति उदार होते हैं। वे विदेशियों की बड़ी खातिर करते हैं। और उनके आरामकी पूरा ख्याल रखते हैं। श्याम के देहातों में यदि वे किसी विदेशी को पा जाते हैं तो बिना कहे ही उसके भोजन की व्यवस्था कर देते हैं। —हिन्दू से

श्री सीता स्वयम्वर।

पूर्व प्रकाशित से आगे।

विविध प्रकार सनमानि कै विदेह नृप सुता जाय लीबो आज्ञा दीन्हो सतानन्दको।
चले हैं महर्षि ऋषि सुकवि उदार द्विज जहां भूप मंदिर मे आनन्द अमंद को॥
मुदित सुनैना सुनि आगम मुनी को धाय आसन दै धोवती है चरणार बिन्द को।
सीय को बुलाय लिपटाय बारि मोच पुनि प्रेम पूर्ण चंद्रिका लगाय उर चंद को॥
चोवा घनसार मलि करवाये असनान पोंछि अंग २ चारु सारी पहनाती थी।
बेणी गूंथि रुचिर अमोल मणि मोतियों से भाल पे विशाल लाल विन्दी को बनाती थी॥
अरुण कपोलन पै इतर मलती थी अरु मुख मे तम्बूल की सुलाली दरसाती थी
अञ्जन सुलोचनों मे ललित उदार द्विज कलित प्रसून माल रानी पहनाती थी॥
कर कगंन थे मणि मय पहुंची अरु बाहु पै केवर मञ्जल होती।
पहिने अंगुरिन मे उर्मिका भी सुचि कुण्डल की प्रभा ओस संगोती॥
उर सुमित्रका मुक्ता वली झलके वो प्रलम्बन तार लदा जड़े मोती।
कटि बाटिका मंजिर संसक किंकिणि की ध्वनि काम हू के मद धोती॥

भत्तमतंग महावत हीन ज्यों, पनो मृगी हू ठगी अतिबांकी
संग सखीन के जातीचलीथी मनो छविछीनेहुये बसुधाकी॥
बाल मरालसी मंजुलमालसी देखि उदार बथा प्रतिमा की।
भूप एकाकी हुये सब चकित भूले भले मति है थिर काकी॥

मोहित उदार नरनारी गण जेते रहे सबको पलक निमिराज जनु तजिगे।
शरद मयंक कीधौं अवली चकोरन की कीधौं कंज देखि कै मलिन्द वृन्द सजिगे॥
शिखिरान्त सुखद समीर कीधौं थी सुचारू कीधौं विश्व केतु ही अचानक गरजिगे।
ज्ञान औ गुमान वीरता के त्याग बैठे भूप भाजे वायु वेग से घमंड घन भजिगे॥
लार घूंटत थे भींज कर को महीप गण सबके हृदय मे खल भलसा मचाया था।
अस्त्र छूट २ के बसुन्धारा पै लोटते थे कोई भांत बिकल उदार चकराया था॥
काहू के पसीना का प्रबाह रुकता था नहीं काहू नैन तर घोर अंधकार छाया था।
केते अकुलाते थे विलम्ब क्यों सुयज्ञ मे है केतन को मानस सरोज कुम्हिलाया था॥
जनकदुलारी के चपल मतवारे नैन दैने पैने सर से निकल पार जाते थे।
रघुबीर ही के लिये घूमते थे चारों ओर नृत्यत उदार मोर पंख से लखाते थे॥
मीन सो कमल दल खंजन की चाल चलि सबके हृदय की कामना को भरमातेथे।
काहू को रुलावे थे हसावे काहू को अपार किन्तु निज मानस मराल नहीं पाते थे॥
छणक गंभीर हुआ नीरव निवास पुनि जनक गुलाब भांट आदर कियो महान।
कहदो सभा प्रण सीय के स्वयंवर का देखो किसी भूप को न किंचित भी होवे ग्लान॥
प्रेम रस साने सुनि बैन चले वंदी जन हृदय पुनीत बार बार अति पुलकान।
दोऊ भुज ऊपर उठाय स्वर दीरघ सों सुनिये महीप गण बोले कबिता मय गान॥
सुनिये महीप द्वीप द्वीपके प्रयूजनीय मिथिला नरेश ने विवाह प्रण ठानो जौन।
शंकर सरासन अचल निज आसन पै इसकी प्रतिंचा को चढ़ाना कहो बात कौन॥
किन्तु यह अपने हृदय मे तो बिचारि देखो चन्द्र को विलोकि राहुधार सकता न मौन।
जिसने चढ़ाया बल बीरज उपाय सन विश्वकी विजयनी लक्ष्मी का अधिकारी तौन॥
लङ्कपति रावण सगर्व आयो वाही हेतु विविधि उपाय सों उठायो करिकरि दाप।
हार मानि मनमे लजाय बलकों दिखाय मस्तक नवाय सो अभागो थर २ कांप॥
वाणासुर आयो सोऊ रंचन डोलायो यहि करि कै प्रणाम गौन कीन्हो धाम चुप चाप।
होगा अधिकारी यहि गौरव के सोई बीर जाने सीय पाई खंडि गरुअ कठोर चाप॥

—नन्दकिशोर अवस्थी उदार,

—+—

अभिलाषा।

प्रभु चरणामृत परतरहैं मुख माहि, कान माहि भागवत गीता ध्वनि भरिये।
मेदिनी प्रसाद सत सङ्ग सुख लूटैं नित, शुद्ध ज्ञान भक्ति मन माहिदृढ़ करिये॥
जनम मरन के जंजाल जाल जारि, दाया करिकै दयाल ? दीह दारिद कोदरिये।
मूरति तिहारी तिरभङ्गी हियमाहिबसै, हेहरि ? हमारे दुःख याहि विधि हरिये॥
मातु के उदर मे रहे हौं सुतो जान्यों नाहि, जनमि बितायो पांच वरस अजान मे।
मेदिनी प्रसाद बाद बालकन संग माहि, दिवस बिता यो खेल कूदके विधान में॥
मातु पितु गुरू साख सोखि पेट पालिबे को, ज्ञान भयो फंस्यो फेरि नारिके फँसान में
सुत वित सुख जानें सब जग दुःख जाने, जानै अब चाहौं हरि आवैं कब ध्यान में॥
कबलौं छुटैगो यह जगके जँजाल जाल, छूटै नारि प्यारी कब जौनहैफ निन्दसम।
तैसे परिवार के अपार सुख छूटै कब, जिनके भरोसे हम रहत नरिन्द सम॥
मेदिनी प्रसाद कब रामराम रामराम मुखते कढ़ैगे नाम जोहैं रवि चन्द सम।
कब मनमेरो जाइ लपटि रहैगो नाथ, रावरे चरण अरविन्द मे मलिन्द सम॥
कीन्हें हम भोग सोसयोग कहिवे को नाहि, कीन्ह सत सङ्ग वह ढङ्ग सब न्यारी है।
मेदिनी प्रसाद व्याकरण आदि शास्त्रन के भेद कछु जानि हम लीनो स्वाद भारी है॥
साधू भये कविभये बुधवर कहे गये, आजहूं लौ वैसही चलति साख सारी हैं॥
लागै मन ईश चरणारविन्द पर कब, भारी हूं ते भारी यह लालसा हमारी है॥
कौन दिन कौन छिन ह्वै है जौन दिन, धरि धनुवान मम सामुहे सुहावोगे।
अलक झलक देखि पलक पलक परै गो नाहि, बार बार आइ पतिपट फहरावोगे॥
मेदिनी प्रसाद भववारिधि में डूबन के, डरते अधीर माहि देखि मुसुकावोगे।
पद अरविन्द दरसाइभ्रम को मिटाइ, नाथ ? कबमोहि अस धीरज धरावोगे॥
जलद बरन अति सोभित सुतन, माथे क्रीट की धरन सोहै कुण्डल करन मे।
मेदिनी प्रसाद चहुं फैली है किरिण कैसी, आभरन ओप गरे मोती की लरन मे॥
अम्बरन धरन बरन तन अतरन, छाजत सुछवि अरुनाई अधरन मे।
दारिद हरण मुद मंगल करन ऐसे, जानकी रमण के चरण की शरण मे॥
राम कृष्ण विष्णु सूर्य शंभु शक्ति औ गणेश, सम्रदेव एक जानि भेद कीजियेन लेश।
भेद बुद्धि जो करै सुतो अहै महा अज्ञान, बेद शास्त्र हूं पढ़यो बृथा तऊ नहीं प्रमाण॥

एकईश अंश है समस्त जक व्यापमान, अंश के विहीन वस्तु को उहै नहीं जहान।
एक इष्ट कै करो अनेक इष्ट आप जान, हैं परन्तु मोर भक्ति सप्तदेव मे समान ॥

—मेदिनीप्रसाद पाण्डेय

दुर्गरच,

घटा पापा बारी अब जननि ? जोरों चल रही।
बेचारी हिन्दी की अब दुर दशा जो बन रही ॥
करोड़ों गौओं का बस निधन मातः बन रहा।
दशा क्या बर्णु मैं अध पतनताही मिच रही ॥

देवदत्त शास्त्री; मनौली, अम्बाला

भारतीय असंघटन।

कुंचिका गणित सोंही अंकनाम पठन सीख, पश्मो बिदेशिन ने भाषा आ बृजेश की।
प्रकृत बनसपतीय भेद बैद आदि सर्वे, लूटी क्रिया जोतिष रसायन विशेष की ॥
वायु नभ यंत्र कीय ऊष्णा अरु चुम्बकीय, बिद्युत प्रकाश लीन्ही युगति हिंवेष की।
सुन्दर विपच्छियों ने विद्या लूट किनी खूब, लूटी है न एक फूट हाय हिन्द देश की ॥

प्रोफेशर सुन्दरसिंह

प्रार्थना पचङ्क।

जय बंशी धर मुकट धर, गिरि धर सुखमा धाम।
जय जय जय राधा रमण, जय लीला धर श्याम ॥
जय लीला धर श्याम, भक्त गोपिन के प्यारे।
नट नागर गोपाल, यशोदा नंद दुलारे ॥
बरणत हैं कबि लाल, धन्य सुख धाम अना मय।
अ शरण २ महान, योगि बर मोहन जय जय ॥
धाये दीन गोहार सुनि, गज की दीन दयाल।
खम्भ फारि प्रहलाद हित, फार्यो असुर कराल ॥
फार्यो असुर कराल, द्रौपदी चीर बढ़ाये।
दुश्शासन थकि जात, अंग उघरन नहिं पाये ॥

वरणत हैं कवि लाल, पांडु सुन जरत बचाये ।
लगन न पाई आंच, शरण सुनतहिं हरि धाये ॥
गीता की शुचि वाणि वह, अजहु सुनाई देत ।
पारथ सों जगहित कहीं, प्रण करि के कुरु खेत ॥
प्रण करि के कुरु खेत, घोषणा अमर बखानी ।
युग प्रति प्रगटित होय, हरत मैं धर्म गलानी ॥
बरणत हैं कवि,लाल, भूमि हरि भई सभीता ।
होय सगुण औतार, नाथ यश गावत गीता ॥
भक्तन संतन भूमि अरु, गो द्विज सुर उपकार ।
होत प्रगट प्रति युग समय, गीता कहत पुकार ॥
गीता कहत पुकार, नेति कहि बेद पुकारत ।
खल बल प्रबल नशाय धर्म ध्रुव जगत पसारत ॥
बरणत हैं कवि,लाल, हनत हरि दुष्ट प्रमञ्जन ।
अटल बेद मत थापि, अभय करते निज भक्तन ॥
भरत की आरत दशा, जानत सब बृजराज ।
लखि दीनन की दुर्दशा, चुप बैठे कित आज ॥
चुप बैठे कित आज, रमहुं दधि पार सिधारी ।
विद्या ,काल सुनीति, शांति शुभ मती पधारी ॥
बरणत हैं कवि,लाल, फूट पसारी कर गारत ।
करहु धर्म उद्धार, देश अपनी गुनि भारत ॥

पुत्ती लाल शुक्ल बिलास पुर

सरस सुक्तियाँ ।

पार पयोनिधि कै पल में, हनुमान गये कुछ की नहिं देरी ।
बैठी सशोक अशोक में जानकी, को लखि भै अँसुवान की ढेरी ॥
दीन दशा को बिलोकत ही, झट मुद्रिका डार दई प्रिय केरी ।
चिन्ह लख्यो अति मेद भयो, उपजी हिय में शुचि प्रीति घनेरी ॥
रूप अनूप नहीं है अहः, लखिये तिस पै अभिमान भरी है ।

सम्प्रदान कारक की हिन्दी विभक्ति को तथा द्राविड़ कु' मे बहुत साम्य है। (५) संस्कृत के तारतम्य सूचक प्रत्यय तर तम ईयस तथा इष्ठ नष्ट हो गए और आधुनिक भाषाओं मे उनकी जगह और अधिक बेशी आदि का प्रयोग होता है। ठीक ऐसा ही द्राविड़ भाषाओं मे भी हुआ है।(६) आधुनिक आर्यन भाषाओं की प्रकारार्थ द्विरुक्ति अर्थात प्रतिध्वनि शब्द जैसा हि० घोडा ओडा, गुज० घोड़ो बोड़ो आदि ता० कुदिरइ - किदिरइ कन्नड़ कुदिरे गिदिरे, तै० गुर्रमु आदि के समान है। चूँकि प्रतिध्वनि शब्द केवल द्राविड़ तथा आधुनिक भाषाओं मे ही पाए जाते है, अत: आधुनिक भाषाओं की प्रकारार्थ द्विरुक्ति द्राविड़ के अनुसार है। (७) संस्कृत तथा आधुनिक भाषाओं की कृदंत क्रियाएँ अर्थात भूत तथा वर्तमान कालिक कृदंत द्वारा बने हुए क्रिया रुप जैसे सं० चलामि चलिष्यामि करिष्यति ब्र० चलिहउ हि० करता है, चला था आदि द्राविड़ की भांति हैं (८) द्रा० तथा सं० दोनों में वाक्यों में शब्दक्रम कर्त्ता कर्त्ता का वस्तारकर्म कर्मका विस्तार, क्रिया का विस्तार तथा क्रिया ही है। अतः वाक्य विन्यास मे भी समानता है। (९) भारतीय भाषाओं के अनेक शब्दों जैसे नीर पट्टन पल्ली ग्राम मीन आलि अक्का पिल्ला चुरुट आदि द्राविड़ की देन हैं। (४)आर्य:—

[अ] ईरानी वर्ग की बलोची भाषा बलोचिस्तान तथा पश्चिमी सिंध मे और आरमुरी पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत मे तथा पंजाब के सीमांत पर बोली जाती हैं। इस वर्ग की मुख्य भाषा फारसी है। यद्यपि आज काल यह भारत वर्ष मे कहीं भी नहीं बोली जाती तदपि मुगल राज्य मे यह अदालती भाषा थी। स्कूलों मकतबों तथा विश्वविद्यालयों में आज भी यह एक वैकल्पिक विषय है। अतःउत्तरी भारत की आधुनिक भाषाओं मे इसके अनेकों शब्द पाए जाते हैं। पश्चिमोत्तर भाषाए तो बहुत ही प्रभावित हुई हैं। इसका सब से बड़ा प्रभाव उर्दू की उत्पत्ति तथा विकास है। (आ) दर्द अथवा पैशाची वर्ग की भाषाएं दर्दिस्तान मे बोली जाती हैं। इसकी बशगली बोली चित्राल के पश्चिम मे, चित्राली चित्राल में कोहिस्तानी कोहिस्तान मे शीना गिलगिट मे तथा काश्मीरी कश्मीर मे बोली जाती हैं दर्द भाषाओं का लहंदा सिंधी, पंजाबी तथा कोंकणी भारती परविशेष प्रभाव पड़ा है। (इ) भारतीय आर्यवर्ग मे वैदिक, संस्कृत, प्राकृत, पाली तथा अपभ्रंश प्राचीन भाषाएं और लहंदा, सिंधी, गुजराती, मराठी, राजस्थानी, उड़िया, बंगला,आसामी, बिहारी, उड़िया पू० हिन्दी प० हिन्दी, पहाड़ी तथा पंजाबी

आधुनिक भाषाएं सम्मिलित हैं। प्राचीन भाषाएँ भारतवर्ष मे अबकहीं बोली तो नहीं जाती, परन्तु संस्कृत तथा पाली स्कूलों तथा विश्वविद्यालयों में वैकल्पिक विषय अवश्य हैं। आधुनिक भाषाओं में से अनेक मे बहुत कुछ महत्वपूर्ण साहित्यक कार्य हुआ हैं अतः इनका सविस्तर वर्णन पृथक रूप से किया जायगा। [५] विविध अथवा अनिश्चित समुदायः—मे बर्मा की करेन, भारत के पश्चिमोत्तर सीमांत की खजूना, तथा अंडमनकी बोलियां हैं। इनको निश्चित रूप सेकिसी भीपरिवार मेनहीं रखाजासकता।

ईश विनय।

हे पतितपावन अघनशावन चरणअंबुज आपके, मैंदीन अतिमतिहीन पूजं हरनअघ संताप के कीजे मनोरथ पूर्ण मेरा याचता तुमसे यही, बल बुद्धि विद्या विभव संयुत हो सदा भारत यही स्थिररहे सुखशांति मय सरकार काशासन यहां, कपटी कुचाली क्रूर नृपका थिरनहोआसन यहां खरचंसदा सत्कार्यमें धनवानधन हिय खोलके, होंकार्य करता कार्यतत्परसम्मिलितजिय खोलके संस्था अनेकों हैं खुली आगे खुलेंगीं जो तथा, उज्वल करें मुख देशका मंजुल फलों सेसर्वथा विद्वानगण तजस्वार्थ निजडंका बजावें धर्मका, फैलावहावें अतिविमल बिज्ञान तात्विक मर्मका वन नव युवक गण स्वयं सेवक फूटका सिरफोड़ दें, बंध एकताके सूत्रसें सबंध सुखदा जोड़ दें व्यसनी बनें विद्याव्यसनके और कु-व्यसन छोड़दें, आलस अविद्या ईर्षामदमोहसे मुखमोड़दें सोत्साह कार्यारंभकर सोत्साहपूरा करसकें, भलक्लेशसमधन विभवयुत निजदेश फिरभी करसकें जलावयु विद्युच्छक्तिपर अधिकार अपना करसकें, बनभोज विक्रमभीमसे निजदेशकादुखहरसकें लेखकगणों कीलेखनी अज्ञानतम कोमेटदे, उपदेश रूपी रत्न उज्वल श्यामदह में भेंट दे वीरत्व करुणा शांतरसकाशांतिदायकमर्म हो, लोकोप कारी काव्य रचना कविगणों का कर्म हो दीजे शुभाशीर्वाद प्रभु! आबाद हों हमपूर्व सम होवे हमारे कार्य सारे हे स्वभू! सब पूर्व सम है सिंहका तेरी कृपासे हरिण करता सामना, सर्वेश'मोहन' की करो इभि पूर्ण मंगल कामना

सिंघई मोहनचन्द्र, कैमोरी

पेड़।

सह करके तुम स्वयं ताप, औरों का ताप मिटाते हो।
इसीलिए हे पेड़ जगत में तुम अच्छे कहलाते हो।
लकड़ी और फूल फल सब कुछ, करते हो औरों को दान।
इसीलिए हे पेड़ जगत में, मिला तुम्हें भारी सन्मान॥

प्रभु से।

प्रम मयी लालित्य कला का प्रभो ज्ञान वर दे।
उच्च भावना हृदयांकित कर मुक्ता सम जड़ दे॥
बने रहें हम सुखी सदाही निजकर सिरपर दे।
सूर बिहारी सम कवियों से अखिल विश्वभर दे॥

रामचरण लाल त्रिपाठी सा० र०

आंसू।

क्या कहें इन्हें हम आंसू, अनुभव तो यों कहते हैं।
हिरदे के फूट फफोले, ये बूंद बूंद बहते हैं॥
या सागर अंतस्तल का, जब अधिक व्यथा से भरता।
तब आंखों के सोतों से, झरने सा झर २ झरता॥
अथवा विषाद का आतप, जब हद सेभी बढ़ता हैं॥
तब हृदय नयन के पथ से, यों पिघल पिघल बहता है
या मूक वेदना को जब, कोई न समझ सकते हैं॥
अनमोल बोल आंखों से, बन बूंद निकल पड़ते हैं।
अथवा ये प्रेम सिंधु के, अनमोल रतन मोती हैं॥
या आखें निज कोषों से, ये प्रेम बीज बोती हैं।
शिव कवि "अथवा जब आंखें प्रियतम पथ तकते तकते॥
अति श्रम करके थकती हैं प्रस्वेद झलकने लगते।

—शिव शंकर पांडेय शिव"

राधाकृष्ण से।

छटा अनूप जुग्म ज्योति मय जगल्ललाम जै।
वृजाङ्गना वृजेश राधिका मनोभिराम जै॥
मनोज्ञ मूर्ति मञ्जुला विशुद्ध दिव्य धाम जै।
अनाद्यनन्त सन्तबंध शाँति सत्य नाम जै॥

—प्रोफेसर सुन्दरसिंह

विकट सप्तक।

विकट जमाने में प्रणव , विकट भये सब लोग
विकट देश से आ घुसा , विकट फूट का रोग ॥
विकट लोग रखके निकट, विकट भये हैं भूप ।
जनताने भी प्रणव अब , धरा विकट ही रूप ॥
प्रजा विकट शासक विकट , विकट न्याय की रीति ।
विकट कर्मचारी जहा , धाई विकट अनीति ॥
विकट काव्य रचने लगे , प्रणव अधिक कविलोग ।
जिनके भिन्न तुकान्त का , बड़ा विकट मन रोग ॥
छात्र विकट पाठक विकट , विकट चले कुछु पठ ।
कलयुग में अब प्रणवजी , विकट मचाया ठाठ ॥
विकट वीर रण मे भिडे , विकट शस्त्र ले हाथ ।
विकट चुना रण के लिये , प्रणव इन्होंने पाथ ॥
रण मे भी विज्ञान का , विकट जगाहै दाव ।
जिससे जग की फँसगई , प्रणव भंवर में नाव ॥

"ओंकर लाल प्रणव" मेजखेड़ा इन्दौर स्टेट

वंशोध्वनि।

कालिन्दी कूल कदम्ब की डार पै वंशी बजावत कान्ह मुरारी
मुग्ध भए सुनि के तिहुंलोक रहे ठगि से ही चराचर भारी॥
सो धुनि कान परी जिनके तिन देह औ गेह की नेह बिसारा।
कैसे परे कल गोपिन को सब धाई तहां जहं रासबिहारी ॥

नटवरशंकर पांडेय नरगोड़ा

दुखसे।

आओ ! आओ ! अनल अवारो । अंगारे बरसा देना ।
सौख्य मार्ग मेरे जितने हों सब पर अग्नि बिछा देना ॥
कहीं प्रकाश न मिलने पावे कुहू निशा फैला देना ।
तड़का तड़का सिर पर बड़िता नयन प्रवाह थका देना ॥

जल में अनल अनल में पानी थल पर व्योम दिखा देना।
निशि का दिवस दिवस की यामिनि शशि का सूर्य करा देना॥
निर्दयता का अंत जहां हो उससे मुझे भिड़ा देना।
यम का वास जहां होवाहो बन्दे को पहुंचा देना॥
जहां न भय से पहुचे कोई उसकी गोद बिठा देना।
जहां न जावे क्रूर कसाई उससे भेंट करा देना॥
मातृभूमि का प्यार सीखकर दुःख तुझे ललकारा है।
आजा! आजा! मेरे ऊपर हार जीत का बारा है॥

भगवान सिंह चन्देल आलमपुर इन्दौर

कृष्ण से।

हे द्वारिकेश्वर लख रहे हो, भीर जो हम पर परी।
सुख मय जमुन तट पर कदंबन, कब बजेगी बांसुरी॥
भगवान वृन्दावन विषे, फिर रास कब रचि हो हरी।
बिलखत फिरत नित, धेनु तुमरी द्वारिका सूनी परी॥
कारज कवन मँह जुट रहे हो मौन धारण कर लिया।
किससे कहें अपनी बिथा, जब आपने बिसरा दिया॥
दुर्दिन हमारे बढ़ रहे हैं, कौन अघ हमसे भया।
दुर्लभ भये दर्शन तिहारे, दूध माखन चढ़ गया॥
भूमी हरित पथ लोप भे, अब कौन राह चलें कहो।
हे द्वारिकेश्वर नाम सब, पुनि द्वारिका क्यों ना रहो॥
भारत तिहारी आश मे है, खोजता फिरता जहां।
मिट जांयगे वज जायगा, तब धर्म का डंका यहां॥
निर्बल बिहारी फिर बजेगी, बंसुरी घनश्याम की।
जपते रहो माला जगत पति, श्याम के शुभ नाम की॥

रामचन्द्र गौड क्लर्क तराना होलकर

धूल !

अहो ! पथ की धूल हूं मैं ।

विश्व के निर्माण का; जब विश्व पति को ध्यान आया ।
जीव स्वागत हेत मैं ने; ही प्रथम निज तन बिछाया ॥
जुट पड़ा प्रत्येक कण मेरा; जगत का प्यार बन कर ।
प्रेम से जग ने मुझे प्रिय; मातृ भू कह कर बुलाया ॥
विश्व की इतिहास सरिता; का मनोहर कूल हूं मैं ।
आज पथ की धूल हूं मैं ॥

कब हुआ उत्थान अथवा कब; हुआ है ह्रास जग का ॥
असुर बन कर मनुज ने कब· कब किया है नाश जगका ।
कौन कब क्या हुआ किसने क्या; किया क्या खेल खेले ॥
मेरे कण कण पर लिखा है; वह सभी इतहास जग का ।
प्रकृति के सौन्दर्य का आगार हूं मैं मूल हूं मैं ॥
अहो पथ की धूल हूं मैं ।

चीर कर मम तन अनेक पदार्थ मुझसे सृष्टि पाये ॥
मैं जगत के त्राण हित रहती सदा साधन जुटाये ।
तृण कुटी से भव्य भवनों तक सभी हैं रूप मेरे ॥
हूं पड़ी जग के अनेक रहस्य; छाती में छिपाये ।
व्याप्त है सर्वत्र जिसकी गन्ध ऐसा फूल हूं मैं ॥
आज पथ की धूल हूं मैं ।

मृत्यु आकर जब किसी का हाय सब कुछ लूट जाती ।
मैं उसे भी प्रेम से अनुराग से छाती लगाती ॥
स्वयं मिल जाती उसी में उसे अपने में मिलाती ।
प्रेम का यह पाठ सुन्दर सृष्टि को मैं नित सिखाती ॥
प्रकृति का आधार हूं मैं प्रकृति के अनुकूल हूं मैं ।
आज पथ की धूल हूं मैं—

रामभरोसेलाल' मनोज तिर्वागंज

वर्षावर्णन ।

आई वर्षा दुखद गरमी का नहीं लेश भी है।
प्राणी सारे जगत भर के दीखते मोद मग्ना ॥
नन्हीं नन्हीं गगन तल की है धरा बूंद छाई ।
मानों बाता वरण जग का थाण आच्छन्न सा हो॥

सारी पृथ्वी पर सरस बूंदें लखाती गिरी सी ।
नाना बूटों सहित दिखती मेदनी है हरी सी॥
देखो चारो विदिक् दिखते मोद से युक्त प्राणी ।
भारी गर्मी विकल करती थी महा सो टली है॥

त्योंहीं सारे विपिन पशु भी आज आनन्द होते।
प्यासे प्यासे भटक मरते पूर्व थे जो वनों में ॥
छाया मानों सकल बन में "उग्र" उल्लास भारी ।
गर्मी के से तृषित अब वे भी नहीं हो रहे हैं ॥

ऊंचे नीचे सकल द्रुम भी फूलते हैं अनूठे ।
नाना रंगों सुरभित महा बास देते सुहावे ॥
प्यारी प्यारी ललित लतिका फैलती हैं द्रुमों से ।
मानों कांता प्रिय तम सुखी अंक में झूलती हो ॥

न्यारे न्यारे जलद अब हैं दीखते रंग वाले ।
काले पीले सुखद निज हैं मंजु आभा दिखाते ॥
जैसे शस्त्रों युत समर में दीखती शत्रु सेना ।
वैसी प्यारी निबिड़ तम में दामिनी हैं लखती ॥

मंडूकों की सघन निशि में टर्र बोली सुनाती ।
मानों सारा सुधन उनको प्राप्त ही हो गया हो ॥
छोटे छोटे मुदित जुगनू दीखते यामिनी में ।
प्यारे न्यारे भरत भू के लाल हैं धूल के से ॥

केकी कण्ठा विहग सब हैं घोसलों में समाये।
कैसा प्यारा शिखि जुगल का नृत्य है मोददायी ॥

ग्रामों देशों पथिक भ्रमते लौट वे सर्व आये ।
छाया सारे स्वजन मन में खास उल्लास सा है ॥
कूपों नालों सरित सब में पूर्ण है मिष्ठ पानी ।
लोनी लोनी ललित लहरे ले रही हैं तरंगें
प्रेमी प्यारे मुदित दिखते साथ में प्रेयसी के ।
वे वर्षा आगमन लखके केलि में मग्न से हैं ॥
होते सारे कृषक मन में मग्न यों नाचते है ।
वर्षा से ही बसर होता प्राणियों का धरा में ॥
वृद्धी वाले सुजन कहते जीवनाधार वर्षा ।
मानों सारा सुयश इसका पा रहे हैं विधाता ॥

काव्य-भूषण —कुमारदत्त चौबे "उग्र" कोरवा स्टेट

मरदाने की निशानी ।

पानी को रखाये निज बानी की निबाहे टेक-माने न अनीति सानी काहु मन मानेकी ।
आपति में आनन पै ओप चौगुनी हो और -चाह हो सदा हीं दुखो दीन अपनाने की ॥
रामगती जीवन दे जीवन जगाये सदा-रन में नखाये भीति नेक जान जाने की ।
मन मुद मानी कुर बानी करे देश हित -यही हैं निशानी जानो मर्द मरदाने की ॥

पावस बिरहिणी ।

घरि घन जाल आये पाये नहि हाल कछु-मन हो विहाल गुन माल वाको गुनि गुनि ।
मारति समीर तीर चपला चौंकाये देति-उठे उर शूल पिक मोर शोर सुनि सुनि ॥
बादर बँदूखन सों बूँद गिरे गोली सम-रामगती हरी भरी भूमि देति भुनि भुनि ।
सभी विधि पार नेक धीर ना धरात वीर-पावस में कारो प्यारो याद परे पुनि पुनि ॥
सावन सुहावन में आयो मन भावन ना चन्द्र मुखी गति सुनि चित्त घबरायो है ।
काह कहौं बीर पीर नेक ना निबारी जाति नैन बहे नीर मैन निशि दिन जरायो है ॥
शीतल समीर छो तो लागति है तीर सम -घन को सुघोर सोर हिय को डरायो है ।
दामिनि दमक देखि दूनी हो दरद दिल-पपिहा के पी पी सन प्रान ही परायो है ॥

रामगती काव्य-भूषण बेलघाट

क्रांति ।

सड़ी गली दकिया नूसी जर्जर और पुरानी बातों को ।
करती हूं मैं सदा भस्म उनके लख निर्बल घातों को ॥
अति पीड़ित दुखी समाजों की मैं आशा पुंज पुजारी हूं ।
अभ्युत्थान सुखद सपनों की नव जीवन संचारी हूं ॥
स्वागत करते हंस युवक वृन्द बूढ़े देख मुझे कंपते ।
मैं हूं अद्‌भुत चंडी जग की मेरा नाम सभी जपते ॥
सुख सुराज की हूं मैं देवी सब को स्वाधीन बनती हूं ।
कर्म योग की 'पंगु" प्रवर्तिका पाखंड पोप नशाती हूं ॥
मैं प्रलय मचा कर देश देश में उन्नति श्रोत बहाती हूं ।
पाप नाशनी दुष्ट दलन मैं क्रांति अभय कहाती हूं ॥

का॰ भू० हि० र० शिवराम गुरू विद्यामंदिर हरदी बिलासपुर

लीला)

आप बनी श्रीकृष्ण सखी कोउगोपि बनाय धरी सिर गागरी ।
गोप बनी कोउ आगे भई कह दान दिये बिन जाउन आगरी ॥
आय गये लखनेश तहां सखि जाय छिपि सब कुञ्ज में भागरी
जानदे तू धनि हैं नट नागर हों बन आउं प्रिया नट नागरी ॥

लीला धामसे

नहि जानत ध्यान औ ग्यान कथा अरु जाग नहीं सत संग पगी ।
जल तीरथ मान कियो कबहु लखनेश के प्रेमसें दूर भागी ॥
शिशुता तरुनिजु गई रजनी अब आई वृथा मन जोत जगी ।
लखो सूड़ी सघांति खिवैया मनो, मत बोरियो नाव किनारे लगी ॥

उत्साह । लखनेश कवि

जबते ब्रज में प्रगटायो है यह नन्द कुमार महा रस भीनो ।
कान्ति मनोहर नेत्र निहारे सबें निज कार्य भुलाय सुदीनो ॥
तब ते कुलवंति बधू जन के मुख में यह दीरघ श्वास समीनो
पांडर भाव कपोलन में अरु चित में शून्यता बास नवीनो ॥

स्व० रामलाल मिश्र

बाबा विश्वनाथके प्रति ।

कौन करुणा को कान देत रावरे समान - काके कान मांहि जाइ बिपति सुनाइये ।
सूझत न ठौर कोई है न शिर और जाऊँ - काके अब पौर और आपही बताइये ॥
कोई न सहाय कोई रह्यो न उपाय और - दौरत हौं धाय धाय वेगि ही बचाइये ।
बार बार विनय करों मैं कर जोर हा हा - बाबा विश्वनाथ अब बार न लगाइये ॥

नीच ग्रह जाल काल के समान क्रूर ह्वै के - एकै बार मोपै नाथ पीठ दै परोसोहैं ।
जाने कैते जन्मन को कर्म रोग भोग यह - योग में संयोग करि आज ही धरोसोहैं ॥
विपति विहाल परो चातुरी चलै न मोर - काल चक्र मन चीतो चाहत करो सोहैं ।
ह्वै गयो विलम्ब कोई है न अवलम्ब और - बाबा विश्वनाथ एक रावरो भरोसोहैं ॥

मैंतो मति हीनताते सु कर्म छीनता ते - मनकी मलीनताते आयोन तिहारेद्वार ।
आयु की नबीनताते विषयनलीनताते - पाप की प्रवीनताते बांधे पातकनभार ॥
ज्ञानमे गती न ताते आबेविनतीन ताते - भवनिधि मीन बन मन बिहार्यो अपार ।
अब तो अधीनताते सब भांति दीन ताते· अवलम्ब हीन ताते आयो हूं लगाबोपार ॥

मातु पितु ते विहीन वालक रूदत ज्योंही - द्वार द्वार रोइ रोइ बिपति सुनात हौं ।
पूछत न बात कोई पासन बिठात सोच - सोच दिन रात चित मांहि अकुलात हौं ॥
रावरे को नाम नहीं हाबै वह नाम 'शेष" - याते बार बार कर जोर के लखात हौं ।
विश्वनाथ नाम है तिहारोऔर विश्व - मांहि देख नाथ आजमैं अनाथसो दिखातहौं ॥

कौन मुख लेके नाथ विनय करौं मैं आज - कैसे मेरे पाप पंक सागर को पीजिये ।
देखि देखि मोहि घिन मानि हैं तिहारे द्वार - भाव भरे भक्तन के भाव काहे छीजिये ॥
पापी हौं महान याते सामने न आइ सकौं- नाथ एक विनय हमारी सुन लीजिये ।
तेरे सेवकनकी चरण रज है कै राजों - एतो वरदान तो दया को कर दीजिये ॥

जाहिरजुलुम जोर मोपै जगती में होत -जानत हो याते अब तुमहि जनाएका ।
अधम शरीर ते किए है अघ कारे कारे तेरे सामु है में नाथ पापन गनाएका ॥
रसना हमारी विषयन राग गाइ गाइ - बउना रही है तब बिनय सुनाए का ।
कौन आसुतोष सो करै गो आशु दुख दूर -तोहि त्यागि और देवतान को मनाएका ॥

राजन भरेहैं भरपूर पाप तापन के - कौन के प्रताप ते मलीन मैं रितै हौ नाथ ।
कौन ठौर गाल दै बहाय अंसु धानि धार - कौन ठौर भाल हाथ दै के पछितैहो नाथ ॥

लोक में रही न कछु चाहना हमारी याते - 'चाह भरी अंखिन दे कौन के चितै हैं नाथ ।
तुमहू जो त्यागि दैहो तोफिर कहांमैं जाऊ काको अवलंब लैकेजीवन दितै हौनाथ ॥
एक दिन देह दुःख चाहना करन हारे - ऐसो जान तो तो ना तो कबहूं को तोर तो ।
भोग ह्वै हैं रोग ऐसो जानतो जो एक दिन - काहे को अरूझि झोंक २ झक झोर तो ॥
मोहिं दुख दोष जो दिखात आपने अपार - तो मैं उन्हें मानि कै हजार बार छोरतो ।
जान पातो जीवन के गाहक बने गे - 'शेष' नाहक ही मन विषै बाधनान घोरतो ॥

श्रीकृष्णोत्कर्ष ।

मारुतीराव औघटे छिन्दवाड़ा

है जैसी अष्टमी भादों, समैया हो तो ऐसा हो ।
भए वसुदेव गृह नंदन, कन्हैया हो तो ऐसा हो ॥
छुड़ाए मातु पितु बंधन, करी रक्षा हैं दीनों की ।
अनीती विश्व की कोई, हटैया हो तो ऐसा हो ॥
सुरक्षित कर लिया अपने, समझता था जलाशय को ।
उसे भी नाथ कर लाये, नथैया हो तो ऐसा हो ॥
बिचारा था ये सुरपति ने, बहादूँ सारा ब्रज मंडल ।
गुवरधन धार के ब्रज को, बचैया हो तो ऐसा हो ॥
निरख राका की रजनी को, जमुन तट बीन झन कारी ।
रचाया रास सखियों सँग, खिलैया हो तो ऐसा हो ॥
पकड़ कर कंस की चोटी, पछाड़ा रंग भूमी में ।
यही कोई दुष्ट भूपति का हनैया हो तो ऐसा हो ॥
सुदामा मित्र का सारा, भरा भंडार रत्नों से ।
दिया धन धाम है उसको, दिवैया हो तो ऐसा हो ॥
सभा में कौरवेश्वर की, बढ़ाया चीर कृष्णा का ।
जो अपने भक्त की लज्जा, रखैया हो तो ऐसा हो ॥
कराया है महाभारत, लखा कर ज्ञान पारथ को ।
यही कोई मोह माया का, नसैया हो तो तो ऐसा हो ॥
बिनय सुन सिन्धु तट धाये, बचाया ग्राह से गज को ।
रमा दासों के फंदों का कटैया हो तो ऐसा हो ॥

कविरत्न लक्ष्मीप्रसाद मिस्त्री "रमा" हटा (दमोह) सी० पी०

मानुष की भूल ।

हरि सों न हेत कियो उम्मर दराज पाय,
व्है रहे गुलाम लोभ मोह कोह काम के ।
दौलत दराज सब साज वो समाज,
हरि के सनेह बिन तेरे किस काम के ॥
ऐ रे मन मेरे हरि सरन गहै तू अब,
बिगरी सुधारै सब तेरी नाम राम के ।
खर के समान भार घर के उठाये फिरै,
अब हूं तजत नाहीं लोभ धन धाम के ॥

भगवान शंकर से ।

बूंद चारि वारि त्रिपुरारि सीस डारे जो,
दोष दुःख दारिद को वाके हर लेत हैं ।
चाउर चढ़ाये चार बेद हू को विद्या देत,
बेल पत्र शत्रु को सघारिबे के हेत हैं ॥
भांग वो धतूरन से पूरन करत सब,
दीनन को देन हार शंकर सचेत हैं ।
तेरे ही दुवारे कूर कायर को आदर है,
गाल के बजाए ते निहाल कर देत हैं ॥

कुरूपास्त्री ।

खूसट सी आंखें नाक नाक के समान मुख, बानरो की जानों रंग मानो रोशनाई है ।
शीश केश भालू केसे बिथुरे हैं भाल तक गुथी लीख सोभा मांग मोतिनकी पाई है ॥
अजया सी गावै राग भरी अनुराग मुख, थूक बहे जात मानो भूतन की माई है ।
प्रीतम मिलन हित साज वो सिंगार ऐसो, हांड़ी हाथ धारे नारी बैठी चारपाई है ॥

शेषदत्त शर्मा शेष

आवेशभाव ।

बांसुरी बाजि रही बन में सुनि भामिनि भाजि चली बरजोरी ।

त्यों ही 'रसेन्द्र' सो भूलि गई दधि धेनु तनै बछरा गौरी ॥
बस्त्रन को न सँभार रहो अगिया फरिया कहां सारी पिछौरी ।
भू सुर कंकर कंटक फूलओं तान तरंग पै दौरी ठडै बौरी ॥

शिवस्तवः । शारदारसेन्द्र

पिनाकिन् भूतेश. त्रिनयन मृडानी प्रियतम !
हर त्वंमे पापं शितिगल गुडाकेश विषम !
जटाटङ्कस्थाणो. मनसिज रिपो पंचवदन !
हरत्वं मे दुःख पुरहर सुराराति कदन !

का० भू० ओंकारलाल 'प्रणव'

श्रीकृष्ण जन्म ।

शुभप्रद है शुचि भाद्र मास जग में सुखदाई ।
लखते सब शुभ घड़ी तिथी आठें हरषाई ॥
आनन्दित सब एक दूसरे से यों कहते ।
आयेगा वह दिवस जिसे हम मन से चाहते ॥
लेंगे भारत में कहीं कृष्ण चन्द्र अवतार जो ।
नाशेंगे दुख द्वन्द सब थे वृज के रखवार जो ॥
देवकि औ बसुदेव जो थे भारत के जाये ।
पुत्र कहावन हेतु कृष्ण उनके गृह आये ॥
सहकर नाना कष्ट पुत्र हित पड़े बिपत में ।
फिर भी कुछ परवाह नहीं रखते थे चित मे ॥
पति पत्नी दोउ प्रेम से करत ध्यान थे ईश का ।
कोई नहि जग मे हितू हे प्रभु तुझ बिन दीन का ॥
पहरेदार खड़े पहरे पर थे सज सज कर ।
चिउंटी तक भी नहीं पहुंच सकती थी हां पर ॥
हुआ जन्म का समय हुए सब मूर्छित ऐसे ॥
मांजा खाकर मीन होत घूर्णित है जैसे ॥
अष्टमि तिथि बुधवार नखत रोहिणी संग लिये ।

नर तन बालक रूप हो कृष्णचन्द्र अवतरित भे ॥
पड़ी बेड़ियां थी माता पितु के पग कर में ।
खुल गईं एकाएक न जाने कोई घर में ॥
बोले तब भगवान पिता ! यदि मन मँह आवै ।
गोकुल दो पहुंचाय जान कोऊ नहि पावे ॥
कर मे बालक को लिये बसुदेवहु गोकुल चले ।
काल कराल भयावने अगम पन्थ ह्वैंगे भले ॥
गरज रहा घन घोर मेघ झर वृष्टी लाई ।
चमक २ बिजली अति ही भय त्रास दिखाई ॥
शून्य निशा नभ म छाई थी बिकट भयंकर ।
अगम अथाह यमुन जल भी बहता था झर झर ॥
यमुना को उस पार कर गोकुल वे आ घुसे ।
कृष्णहि तज गृह नन्द के ह्वां से कन्या ले खसे ॥
उसी कीर्ति का गान आज करते हैं हम सब ।
परिचय आनन्द प्रेम भाव का देते हम सब ॥
रहते हैं उपवास कठिन व्रत साधन करते ।
ले ले कर शुभ नाम कृष्ण व्याकुल मन भरते ॥
आशा नित मन में यही रखते हैं हम प्रेम से ।
भारत के उद्धार हित प्रगटेंगे प्रभु क्षेम से ॥
आशा की हरयाली सब को सुखी बनाती ।
दुसरे दिन से ही हम सब को शुष्क लखाती ॥
तनको अनुनय विनय नहीं सुनते हो हमारी ।
भारत के तव भक्त हो रहे निपट दुखारी ॥
लखो हो रहे देश में अत्याचार प्रभो बड़े ।
आके शीघ्र बचाइये देखो हैं जाते सड़े ॥

ठा० कुमुद सिंह वर्मा हे० मा० मलहार

अन्योक्ति

विटप विशाल आप पल्लव हरित बने, सर सर सुकृत रंग रूप अंग लाता है ।
सुमनों की सम्पत्ति से सोभित हो नित्य अहा, अलि अनुचरों का समूह घिर आता है ॥
मधुर फलों के भार से झुकी है शाखावली, शक्ति दान मान देने को सी बतलाता है
"सिरस" बखाने कवि कोविद विहंग बिना, कौन श्रीमान के गौरव के गीत गाता है ॥

—शिवरत्न शु० बछरावां

सुषमा ।

घटा घन घोर अटा पर वाम, छटा अति विज्जु विकाश ललाम ।
धरे कर कामिनि को वसुदेव, विलासित मौन प्रकाश अभेव ॥
करैं घर दम्पति मोद महान, भरैं दोउ दोउन अङ्क समान ।
दिवा अलमस्त निशा अलमस्त; सदा अलमस्त लमस्त लमस्त ॥

—वासुदेव पाण्डेय गोवर्धनपुर

आशुतोष से ।

दहो त्रिपुरारी ! हे महेश मुण्डमाल धारी, जीवों को जग में तुम्हारा ही सहारा है ।
पातक अमोघ गिरिजेश जन्म जन्मन के, शीघ्र नाश कारक पवित्र गंग धारा है ॥
अलख जगावे शृंगि डमरू तिहारे वाद्य देता दिखलाई शुद्ध मुक्ति मार्ग न्यारा है ।
दीन हीन सेवकों के दुखद त्रिभाति शूल, मूल से उखाड़ता त्रिशूल ये तुम्हारा है ॥

—गिरिजेश श्रीवास्तव दतिया

शुभकामना ।

शारदा सुहावनी प्रकाशी विश्व कविता सी, रखती है खासी उक्ति ज्ञान मालिका सी है ।
दारिद हरन हिन्दी भाषा की विकासी यह, अमृत वचन जाकी स्वर्ग की सुधासी है ॥
मतिमान नीतिमान ज्ञान गुणवानजन, रहत मगन हिये सबके बिलासी है ।
रजत समान "उग्र" चमकत धर्म भाव, हेरत न दोष देखि हृदय हुलासी है ॥

-कुमारदत्त चौबे "उग्र" काव्यभूषण कोरवा स्टेट

नारी,

शुभ सुचाल चालनी तड़ाक ताक बोलनी, दायनी शरीर—सुख पायनी बनी है ।
नाशनी विकार सर्व कारनी प्रकार नाहीं, राखनी हदालय सुस्वामिनी बनी रहै ॥

साजनी मनिच्छा काज साथिनी शुभाशुभ की, पालनी कर्तव्य निज प्रेम में सनी रहै।
छाजनी कुओसर की पालनी हो लाज कुल, 'माता दीन" साथिन प्रिय नारी बनी रहै॥

वैद्यबड़ाई।

—मातादीन श्रीवास्तव

खाये अवलेह अवलेहु अवलेहु मचै, फकनी के फंकत ही आइ जाव कपनी।
चूरन ते चूर चूर तन होत तात तथा, रसते रसातल को भेज देत इपनी॥
गोलीं जब खात गात होली सम जरि जातु, मरि जात चाट लेत जौन दवा नपनी।
औषधि अमोघ ऐसी वैद्यराज आपकी है, हुई है गति कौन जो दिखैहौ छवि अपनी॥

—पं० ब्रजकिशोर अवस्थी

कल्पनाजगत्।

भावुक मनमन्दिर में मूरतिहो प्रियतम की, बिछुड़नहो तलफनहो अश्रु बनकी मालाहो।
कोयल की कूकनहो वीणा पै थिरकनहो, सरिताके तटहो शशिहँसना मतवालाहो॥
कविकाहो पागलपन उनकाहो भोलापन, सुखद सरिता हो मधुर स्मृतिहो बाला हो।
व्यथित बिजयेश' प्रणय झूलाहो सावन हो झूमनहो झूमझूम मादक मधु बालाहो॥

गोपियों का विरह।

कोकिल की कूक पुनि सारिकाका मधुरगान प्रेमवाण बींधी तिन्हें घायल बनाताथा।
गोकुल को छोड़ के रमे जा कृष्ण मथुरामें, ताजा यह घाव तभी रह रह दुख जाताथा॥
पीत पट धारो नांहि पीत पट धारो नाहि, व्यथित 'बिजयेश' पीत गात ही लखाता था।
श्याम रस पाके उन गोपन के घावों पर, ऊधो का भोग राम रस ही बरसाता था॥

—बिजयसेन अग्रवाल बिजयेश' औरैया।

प्रभुप्रताप।

मन मधुवन मध्य बनि मधुकर हम, करत रहत नित मधुर अलाप है।
पुष्प सुघराई कठिनाई बन्यो पाहन में, शशि शीतलाई त्यों तरनि मध्य ताप है
निशा नायका के उर तारन को हार मंजु, नीरधि के नीर में तरंग भयो आप है।
रामगती जल थल नभ बीच ठौर ठौर, जहां देखौ तहां एक प्रभु को प्रताप है॥

आज और कल।

प्रखर प्रभाकर को आज जहां तीव्र तेज कल ही वहांपै घना अंधियार छाना है।
कोयल कली को आज देखहु विकसाना तो, कलित कुसुम को कल ही कुम्हिलाना है॥

आज है अनंत जहां वैभव बसंत आयो, कल ही तहां पै दुख ताप अधिकाना है ।
रामगती आज के रहे को कल जाना तब, काहें मन मूढ़ भयो नाहक दीवाना है ॥

—रामगती काव्यभूषण हि० र० बेलघाट

गीत,

रोक दो अपना पवित्र प्रवाह!
तुम सरस हो मै विरस हूं आह!
आग नभ मै फैलती वालस!
कंज की मादक सुरभि का लास?
और उस पर मदिर यह मधुमास?
कोमले! यह रक्तकण का दाह!
क्यों कि मेरा है विचित्र स्वभाव!
सिक्त बसुधा ले सुधा की दृष्टि!
खिल रही पाटलकुसुम की सृष्टि?
हाय! पर मेरी अनोखी दृष्टि!
भूलता हूँ विश्व को यह चाह!
क्यों कि मेरी क्षोण शिशुली राह!
देवि-री! बसकरन यह सम्मान!
चिर सुखी जग जानता है मान!
और क्या मै ले सकूँगा दान!
वह गया मेरा पवन उत्साह!
तुम सरस हो मैं विरस हूँ आह!

क्षितिज लोहादी

२

कैसा सुन्दर गांव मनोहर ।
कैसे प्यारे गांव के लोग ॥
कैसा उज्वल भाव मनोहर ।
शांति चिकलन हो इनका घर ॥
प्रात पग के लेता जोहर।
यहां न दैविक भोग ॥
जर्जर तनसे हल चलता है ।
हलधर सहित भ्रमण करता है ॥
शीत उष्ण तन पर सहता है ।
कैसा भीषण योग ॥
अन्न-वस्त्र बिन बच्चा मरता ।
तो भी धीरज धरकर चलता ।
निरखत प्रभु का जोग ॥
धनिकों के घर पखा चलता ।
सूर्य रश्मि में तब तू बहना ॥
पर उपकार लिये दुख सहता ।
नहीं तुझे यह रोग ।
माता का तू लाल अनूपम ॥
दीन-दुखी निर्धन जग का धन ।
श्रम सह कार्य करे नित नूतन ॥
उत्तम "शिव" सहयोग ।

शिवनारायण उपाध्याय सा० म०

बाबू-सन्तराम बी०ए० की अवैदिकता।

ले०-पं० कमलाकांत त्रिपाठी शास्त्री सं० हि० प० स० मंत्री औरैया।

श्रीसार्द्धं धृतसोमार्द्धं सोमं सोमार्धमद्वयम्।
उमोमर्थं चिदानन्दमञ्जसोपास्महे महः॥

पाश्चात्यसभ्यताके प्रभाव से मानवता आज उन्मत्त होचुकी है। तभी न देवप्रतिमा मनुष्य अहङ्कार का पुतला बना जारहा है। पाश्चात्य-सभ्यता दीक्षित आज अपने को सार्वभौम मानने में तनिक भी ननु नच नहीं करते। हमें उनके व्यवहार से वहां तक परमसन्तोष था जबतक हम उन्हें अपना नहीं पराया अथवा और अतएव पाश्चात्यों का शिष्य समझे थे। किन्तु जब हमें यह ज्ञात होता है कि अमुक पाश्चात्य उपाधि धारी परम शान्ति के उपदेशक हमारे प्राणप्रिय सनातनधर्म पर और केवल तपोबलाधिगन्त-व्यवेद शास्त्रों पर भी टीका-टिप्पणी करता है या करने की इच्छा करता है तो हास्य और विषाद दोनों ही उग्र रूप धारण कर लेते हैं। हास्य तो इसलिये कि केवल उत्कूल सिद्धान्तों के द्वारावर्धित बुद्धि वाले व्यक्ति का इतना बड़ा मस्तिष्क कहां जो वेद शास्त्रों की दुर्गम्य बातों को समझे और विषाद इस लिये कि जब वे हमारे वेद-शास्त्रों को मानने ही वाले नहीं हैं तो हमारे अधिकारों पर हमारे सिद्धान्तों पर आघात या टीका टिप्पणी करने का उन्हें क्या अधिकार है।

यह बात मैं शारदा के विगताङ्क में प्रकाशित वर्णविभागवैदिकनहीं शीर्षक लेख के विषय में लिख रहा हूं इस लेख के लेखक बाबू सन्तराम बी० ए० महोदय से हिन्दी संसार सम्भवतः अपरिचित न होगा। आये दिन हिन्दी के पत्र पत्रिकाओं में उनके इसी भांति के सर्वथा अनर्गल-सिद्धान्त-मण्डित लेख प्रकाशित हुआ करते हैं। उस संसार में वे अपनी विद्वत्ता के लिये पर्य्याप्त-परिचित हैं। उस संसार पर इन्होंने अच्छा प्रभाव जमा रक्खा है एक प्रकार यही कहना चाहिये। उस हिन्दी-संसार के ज्ञान के विषय में केवल इतना ही कहना पर्य्याप्त है कि इनके लेखों का उत्तर नहीं होता। पाठक इससे जो चाहें वह समझलें। इसी प्रकार के लेख आप अन्य पत्रिकाओं में भी प्रकाशित कराचुके हैं। वहां पर उन्हें कोई उत्तर न मिला। अतः आपने अपनी ख्याति प्राप्त करने के लिये शारदा में भी दर्शन देने की कृपा की है। हम आपको एत दर्थ धन्यवाद देते हैं विशेष तया'शारदा' के

सम्पादक जी को देते हैं जिन्होंने जानबूझ कर इस लेख को 'शारदा' जैसी पत्रिका में स्थान देकर बाबूसन्तरामजी को विद्वानों के सामने विद्या-दल-दल में डाल दिया अब यदि महाशय बुद्धि का दिवाला निकाल कर दुम झाड़ कर मैदान न छोड़ भागे तो उन्हें अपनी क्याविका का फल अभी प्राप्त हो जायगा। सनातनधर्म पर आज तक उन्होंने बहुत छींटे उछाले हैं। जाति-पांति-तोड़क महामण्डल के भी शायद आप कुछ हैं यह भी पाठकों को स्मरण रखने योग्य है मैं बड़े प्रबल शब्दों में प्रसन्न सन्तराम जी से कहूंगा कि वे अपनी समस्त शङ्काओं को मिटाले जिससे फिर कभी उन्हें शङ्का न उत्पन्न हो। और वे चातुर्वर्ण्य व्यवस्था के अनुसार आचारण करके अपने जीवनका सुधारकरें। चातुर्वर्ण्य-व्यवस्था को इस जागृत विद्वत्समाज के सामने अपनी बुद्धि के अनुसार अवैदिक सिद्ध करने का जो यत्न किया है वह ठीक वैसाही है जैसे कोई दीपक के द्वारा दिन में सूर्य की असिद्धि सिद्ध करे। अस्तु पाठक वर्ग शारदा की वह संख्या जिसमें इन महोदय का वह लेखछपा है उसे आप ने सामने रख कर जो उत्तर मैं दे रहा हूं। उसे मिलावें और औचित्यानौचित्य पर विचार करें। सर्व प्रथम आपने लिखा कि आर्यों के परमशास्त्र ऋग्वेद में चातुर्वर्ण्य का विधान कहीं नहीं इस कठिन प्रतिज्ञा का क्या यह तात्पर्य है कि आर्यों का प्रामाण्य ग्रन्थ केवल ऋग्वेद ही है। यदि यही बात है तो फिर इन महानुभाव ने श्रीमद्भागवतादि के प्रमाण उद्धृत करने का कष्ट ही क्यों किया। उन्हें तो ऋग्वेद के द्वारा ही सब कुछ सिद्ध करना चाहिये। अथवा हम मानलें कि 'परम' शब्दका अर्थ उनकी बुद्धि में नहीं समाया। दूसरी बात यह है कि जो वस्तु ऋग्वेद में न पायी जाय तो क्या वह अन्य वेदों से ग्राह्य नहीं है? क्योंकि वेदोऽखिलो धर्ममूलम् में सभी वेदोंका ग्रहण है। पुनः ऋग्वेद के समान ही सभी वेद 'यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै'; इस श्रुति के अनुसार एकसाथ प्रादुर्भूत हुये। आपने भी केवल ऋग्वेद के प्रमाणोंसे काम न चलनेपर अथर्व के भी एकाध प्रमाण उपस्थित किया है इससे सर्व प्रथम तो यह प्रत्याख्यात हुआ कि आप परमशब्द का अर्थ नहीं जानते, एवं आप ऋग्वेदातिरिक्त अन्य वेद एवं पुराणों को भी प्रमाण मानते हैं बाबूसन्तराम भी आर्यसमाजी हैं. क्योंकि ऋग्वेद काल में उन्होंने दो वर्ण स्वीकार किये हैं। तदनुसार दो में कोई वर्ण है ही। आज कल छोटे लोग उच्च बननेका दावा करते ही हैं, अतएव आप अपने को आर्य ही मानेंगे। उन आर्यों में भी आपको स्वामीदयानन्द आर्य समाजी के ही चेलेसमझना चाहिये

यदि आप अपनी आधुनिक कल्पनाओं के अनुसार वर्ण व्यवहार से पृथक हैं तो आप क्या हैं इसे प्रत्येक पाठक ही विचारले। उस परिस्थिति में आपको वेदोंपर विचार करनेका कोई अधिकार ही नहीं। आपनेविचार-विनिमय आर्यसमाजियों से भी बढ़कर किया है अतएव हम आपको आर्य्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द का चाचा मानते हैं। एतदनुकूल ही हम आपके प्रमाणों का खण्डन करेंगे।

दूसरी बात यह है कि आपने यह नहीं दर्शाया कि आर्य शब्द से क्या अभीष्ट है। गुरुकुल मे रहकर कदन्न भोजन करने वाले अथवा अन्य कोई। इनका कोई परिचय नहीं दिया गया। विजानी ह्यार्यान् ये च दस्यवः इस मन्त्र में जो आर्य शब्द आया हैं उसका अर्थ समझने केलिये बी०ए० की बुद्धी का सबखर्च होगयी। आर्य शब्द का अर्थ श्रेष्ठ होना तो वैदिक लौकिक सभी शास्त्र स्वीकार करते हैं। जैसे "कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम" इस मन्त्र का अर्थ सायणाचार्य ने "विश्वं सोमं अस्मदीय कर्मीर्थं आर्य्यंभद्रं कुर्वन्तः किया है। इस अर्थ में कहीं भी आर्य शब्द जाति परक नहीं है। अमरकोषकारभीमहाकुलकुलीनार्यसभ्य सज्जनसाधवः लिखा है। वे भी महाकुलीन कोआर्य मानते है फिर न जाने ब बू के बाबाने बाबू को आर्यशब्द जातिपरकहैकैसे बता दिया। वस्तुतः यह शब्द श्रेष्ठता का वाची है। "विजानीह्यार्यान् येच दस्यवः का यही अर्थ है कि हे इन्द्र त आर्य्यो श्रेष्ठों को और दस्युवृत्तियों को पहिचान दस्यु का अर्थ शूद्र करना आपकी बुद्धिमन्दता ही प्रकट करता है। दस्यु का अर्थ शत्रु या चोर तो मिलता है, परन्तु शूद्र कहीं भी नहीं मिलता कहिये यहां पर आपने संसार को आँखों में धूलझोंक कर अपनी दस्युता का परिचय दिया या नहीं।

फिर भी हम अपनी उदारता के अनुसार कुछ समय के लिये आपके दस्यु को शूद्र स्वीकार कर लेते हैं यहांआप स्वतः प्रमाण हैं एवमेव सभी वेदभाष्यकारों ने आर्य शब्द से ब्राह्मण ही अर्थ किया है और ब्राह्मण शब्द को उपलक्षण मानकर क्षत्रिय और वैश्य का भी ग्रहण किया है। अत एव आर्यः स्वामि वैश्ययोः। ३।१।१०३ पाणिनि के इस सूत्र के उदाहरण में ब्राह्मण क्षत्रिय का स्पष्ट उल्लेख है। यदि बाबूमहानुभाव के कथनानुसार आर्य को जातिवाचक स्वीकार भी किया जाय और यह माना जाय कि उनके कथनानुसार वेदकालमें आर्यऔरदस्यु यहीदोजातियां थी तो शूद्राऽऽर्य्ये वस्टज्येताम् यजु० १४।३०। उत शूद्रमुतार्य्यम् अथर्व ४।२०८ शूद्राय चार्य्यायच अथर्व०१९।३२।८ इत्यादि मन्त्रोंमेंतो यह चतुर्थवर्ण आयाहै उसका क्या समाधान करेंगे बाबूजी। बाबू जी के पूज्य स्वामी दया-

नन्द आर्यसमाजी ने भी स्वीकार किया है "कि ब्राह्मणक्षत्रिय वैश्य द्विजों का नाम आर्य और शूद्रका नाम अनार्य है। सत्या० प्र० १४० आ० प० इसप्रकार आर्यशब्द विशेषण और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य का उपलक्षण समझना चाहिये। क्योंकि "प्रधानेन हि व्यपदेशा भवन्ति' यह सिद्धान्त है।

बाबू जीने अपनी सर्वज्ञता प्रकट करतेहुये यह भी लिखा है कि ऋग्वेदमें कहींभीब्राह्मणों का नाम आयाही नहीं सो भी हम पाठकों के सामने उद्धृत करते हैं—

"ब्रह्म द्विषे शरवे हन्त वाउ' ऋ० १०।४२५ १६ इस मन्त्रमें ब्रह्मशब्द ब्राह्मण वाचक ही है क्योंकि 'ब्रह्म हि ब्राह्मणः क्षत्रग्व राजन्यः" शतपथ० ५ १।५ २-३ समानार्थावेतौ ब्रह्मशब्दो ब्राह्मणशब्दश्च अतश्च समानार्थौ। एवं ह्याह कुतोन चरन्ति ब्रह्मान कुतोन चरसि ब्राह्मण। इति तस द्वयोः शब्दयोः समानार्थयो रेकेन विग्रहः" महाभाष्य ५।१।७। निरुक्तमें भी "ब्रह्म-द्विषे का अर्थ ब्राह्मणद्वेष्टा ही किया है। अमर-कोष के नानार्थवर्गमें " ब्रह्मा विप्रःप्रजापतिः' लिखाहै। इस प्रकार ऋग्वेद के उक्तमन्त्र का ब्रह्मशब्द ब्राह्मणही है। कहिये सर्वज्ञ महाशय इसकाआपके पासक्या उत्तर है। औरभी "-निसर्वाणि अपक्रामन्ति ब्रह्मगवीमाददानस्य जिनतो ब्राह्मण क्षत्रियस्य" अथ० १२ ५।२।११ इस मन्त्रमें ब्राह्मण-तिरस्कार करने वाले के तेज, बा,गृधी,धर्म्म राष्ट्र यश,धन, आयु-प्रजा पशुका नाश होजाता है यह लिखा है। 'अस्मे ब्राह्मण अस्मै क्षत्राय 'यजु १८ ४४ इनमन्त्रोंमें स्पष्टतया ब्राह्मण का नाम लिखा है।' प्रह्मेति ब्राह्मणनां नामास्ति" स्वामी दयानन्द आर्य्य-समाजी भी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के ८७पृष्ठ परलिखते है। वर्णोत्व इनकास्वतः सिद्ध है! क्योंकि आपने स्वय ही उभौ वर्णावृषिरुग्रः पपोष इसमन्त्र में अपने कहे आर्य और दस्यु को वर्ण स्वीकार किया है। अत एव आर्य स ब्राह्मणमे क्षत्रिय वैश्य वर्ण और दस्यु से शूद्र वर्ण आप स्वतः स्वीकार कर रहे हैं।

एवमेव सहस्रों प्रमाणभरे पड़ेहैं। जिनके उद्धृत करने से लेख का कलेवर बहुत बढ़ जायगा। इस प्रकार आर्य दस्यु के साथ जहां वर्णशब्दका प्रयोगहो वहां आर्यवर्णसे ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य वर्ण और दास से शूद्र वर्ण ही आपके कथनानुसार मानना चाहिये।

इनके प्रमाण हम ऊपर दे चुके हैं। इस प्रकार बाबू महाशय के आर्यजाति की असि-द्धिहो चुकी। पाठक समझ गये होंगे कि यह महानुभाव क्या क्या पढ़े हैं जो किसी मन्त्रका अर्थ किस प्रकार समझते हैं। बेद जैसे गहन विषय कोबी०ए० पासकरके नहींजाना जास-कता। उसकेलियेतोसमर्थ शास्त्रीय गुरुचरणों का हीआश्रय लेना पड़ता है।

आगे "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्" इत्यादि

मन्त्रको स्थापित करते हुये हृष्टगात्र हो कर आर लिखतेहैं कि 'इस प्रसिद्ध मन्त्र कोभी आचार्यों ने यज्ञपरक ही लगाया है समाज परक नहीं। धत्तेरी वुद्धि की ऐसी तैसी। गजव होगया अँगरेजों के राज्य में वुद्धि का दिवाला निकालने वालों के लिये दण्ड-विधान नहीं है नहीं तो कच्चे गुरू के चेले सन्तराम बावा को भात का मांड पिलाने की सजा दी जाती। बावूजीको यहभी नहीं मालूम कियह मन्त्र है किस प्रकारण का! मालूम होता है कि सुनसुन कर सब कुछ लिखा करते हैं। अच्छा भोलानाथ सन्तराम बावू कान लगाकर सुनो यह मन्त्र सृष्टि प्रकरण का है। इसे अभी तक किसी ने समाज परक या यज्ञ पाक नहीं माना। सहस्र-शीर्षा पुरुषः"इस मन्त्र से प्रारम्भ करके किसी विद्वान से पढ़वा कर अर्थ पूछ लीजिये गा। उस प्रकरणमें सब कुछ उत्पन्न हुआ ही लिखा है। "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्वाहू राजन्यः कृतः उरूतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत्" इस मन्त्र में जनी प्रादुर्भावे और डुकृञ् करणे धातुओं का ही प्रयोग है जिनका कर्तृसत्ता विशिष्ट उत्पत्ति अर्थ होना स्पष्टहै यज्ञ परक जिन्होंने अर्थ कियाहै वेभ्रान्त है। यह तो प्रकरण ही सृष्टि का है इसमें यज्ञ की कोई विधि नहीं से है। वर्ण के विषय में फिर आप ने दो वर्णों का नाम लिया है जिसका उत्तर मैं प्रथम ही दे चुका हूं कि आर्यवर्ण से ब्राह्मण-क्षत्रिय वैश्य वर्ण अभीष्ट हैं और दास या दस्यु से आपके कथनानुसार शूद्रचाण्डालादि हैं। 'शूद्रवद्वहिष्कार्यः" का अर्थ ठीक ही समझा। अपने घर की बातको सभी समझलेते हैं। यह तो मैं भी कहता हूं कि शूद्र आर्यों से इतर हैं तभी चातुर्वर्ण्य की सिद्धि होती है।

आगे आपने महाभारतका एक श्लोक भी प्रमाण स्वरूप उपस्थित कियाहै कि "एक वर्णमिदं पूर्वं विश्वमासीद् युधिष्ठिर ' इसका अर्थ यह होता है कि हे युधिष्ठिर! यह सब पहिले एक वर्ण था। तोमैं पूछता हूं कि अभी अभी ऊपर आपने ऋग्वेद के द्वारा दो वर्ण स्वीकार किये हैं। अब कहिये कि महाभारत का यह प्रमाणमानते हैं कि ऋग्वेदका। क्यों कि महाभारत की दृष्टि मे ऋग्वेद झूठा सिद्ध होगया। आपने यहभी नहीं लिखा कि यह श्लोक कहां का है कि वह प्रकरण देख कर उत्तर दिया जाय अतएव यह स्वतः प्रत्याख्यात है। अनर्गल है आगे आपने श्री मद्भागवत एक श्लोक लिखाहै जिसका अर्थ है "पहिले एक अद्वितीय नारायण देवता एक अग्नि और एक ही वर्ण था। इस मे वर्ण का उत्तर हम पहिले ही वता चुके हैं कि आपने दो वर्ण स्वीकार किये हैं अपने ही प्रमाण से स्वतः खण्डित हैं। एक ही देवता था यह तो मैं भी मानता हूं। क्यों कि "एकोहं है बहुस्याम्' यह श्रुति इस श्लोक की मूलिका है। पहिले एक रहा ही अनन्तर

अनेक होगया। इस श्लोक से बावा सन्तराम केमत की कि चातुर्वर्ण्य विभाग अवैदिक है तनिक भी पुष्टि नहींहोती। पहिलेदो वर्ण मान कर बाद मे एक वर्ण चिल्लाना, प्रतिज्ञा हानि सङ्करता, धोखेबाजी, बेईमानी है।

इस प्रकार चातुर्वर्ण्य व्यवस्था वेदोक्त है यहबावा सन्तराम के प्रमाणों के खण्डनसे सिद्ध होचुका हैं। आगे आपने समता काप्रश्न उठायाहै एतदर्थ अज्येष्ठासोऽकनिष्ठास इत्यादि प्रमाण भी देमारा है। फिर भी आप भूल गये अजी ज्येष्ठ और कनिष्ठ कहनेसे ही समताभङ्ग होगई। आप जो कहना चाहते हैं वह इस मन्त्र से सिद्ध नहीं होता। अतएव आोसमता- के ढोंगीयह मन्त्रहीज्येष्ठ कनिष्ठस्पष्टतया उच्चा रण करने के कारण आपका अर्थ साधक नहीं हैं। फिर भीमैं कहताहूं कि इनका यह 'माण चाहे केवल मनुष्य जाति ही के लिये सिद्ध हो जाय। और यह केवल मनुष्य जाति की ही समता निभावे। औरऔरों के साथ शत्रुताही निभावे। जैसे गान्धीजीने गोवत्स को मरवाकर पशुओं से शत्रुता का परिचय दिया है. परन्तु हमारी समता इन महोदय से कहीं बढ़ कर हैं। हमतो मानते हैं "सर्वं खल्विदं ब्रह्म 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः किन्तुजैसे एक पिता अपने अनेक पुत्रों को उनकी श्रेय सिद्धि के विभिन्नकार्य अर्पण करताहै ठीकउसी भांति उस जगत पिता परमात्मा ने हम सबको एक भाई बनाकरभी श्रेय के वर्णाश्रमधर्मपालनादि अनेकमार्ग बतादिये हैं। क्याइसी तरह बन्धुता नष्ट होती है और समता नाम शेष होती है धन्यवाद ! इसी लियं तो भगवान नेकहा है "स्वे स्वे कर्मण्य भिरतः संसिद्धिं लभते नाराः अन्यथा शूद्र यदि अपने कर्म त्यागकर उच्चा- कुलानुकूल आचरण करेगा तो वह सिद्धि कैसे प्राप्त करेगा, वह कैसे सुखी होगा। वस्तुतः सनातन धर्म के सिद्धान्त तो इतने उच्च इतने उदार हैं कि उन से देश का जाति का अक- ल्याण कभी होही नही सकता।

उसके अनुसार आचरण करने वालाकोई भी व्यक्ति दुःखी नहीं होसकता। हम आज जिस आपत्ति मे फंसे हैं और उससे छुटकारा पाने के सतत उपाय कर रहे हैं वह सब इन बाबू लोगों का ही दिया हुआ है। क्योंकि एक सङ्गठित समाज में परस्पर शत्रुता का बीज वपन करने वाले स्वामी दयानन्द आर्यसमाजी नें जब से वेदों के विषय मे अनर्गल सिद्धन्तों का प्रचार करना प्रारम्भ करदिया तभी से समाज धर्म-विमुख होगया और उसके परि- णाम स्वरूप आज वह नाना यातनओं कोसह रहा है।

जहां पर धर्माचरण होने केकारण सर्वतः शान्ति विराजमान थी। जिसकी शान्ति को देख कर देवता भी मुक्तकण्ठ होकर कहते थे कि धन्यास्तु ये भारतभूमि भागे। वहां आज

इन बाबू जन्म अशान्ति के कारण एक क्षण भी रहना कोई पसन्द नहीं करता। जहां ऋषियों की तपश्चर्योंका प्रभाव समस्त भूमण्डल पर पड़ाथा वही देश आज बाबू कलङ्कों के उत्पन्न होजानेके कारण दूसरोंका दासबनाहै जिस देश की विद्या के सामने समस्त भूमण्डल मस्तक झुकाता था उसी देश के बाबू लोग आज पाश्चात्य भाषा पर ही गर्व करते हैं। क्या यह भारत माता का अपमान नहीं है. और निर्लज्ज फिर भी वृद्ध सनातन धर्म पर वाक्प्रहार करने से नहीं चूकते। जहां के सदाचार, जहां की रीति नीति धर्मका अनुकरण करने को इतर देश लालायित रहते थे, जिस देश के लिये सृष्टयादि में उत्पन्न मनु-ने कहाथा कि "स्वं स्वं चरित्रंशिक्षेरन पृथिव्यं सर्वमानवा;" उसदेशके मस्तकको बाबू सन्तराम जैसे बाबूओं ने म्लेच्छों के चरणों पर झुकवा दिया। यहदेश अपने आचार विचार के कारण ही विश्वविख्यात है। वर्णव्यवस्था ही इस देश का प्राण है अन्यथा हम में और म्लेच्छों में आज कोई अन्तर न होता। वास्तविक बात तोयह है कि धर्माचार भ्रष्ट समाज पतित जन समस्त भारत को पतित करने का साहस कर रहे हैं, मैं तो अन्त में इन बाबू महाशयसे यही निवेदन करनाचाहिता हूं कि इस वृद्धा भारतमाता पर कुछ दया करो। ओ निर्दयबधिक! उसकी लज्जाको बची रहने दो तुम्हरी क्रूर चालों से आज वह व्यथित होकर रोरही है। ओ सुधार के नाम परधर्मांचार केलुटेरे! हम गरीबों के धर्म पर हमारा ही अन्न खाकर नमक हरामी के साथ अत्याचार न कर। देख यदि तू उन्नति चाहता है तो अपने इतिहास की ओर दृष्टिपात कर तेरा परम गुरु व्यास चिल्ला रहा है 'ऊर्ध्वबाहु र्विरम्येष न च कश्चिच्छृणोतिमे। धर्मार्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते॥ तेरे सामने सूर्य और चन्द्रमा की भांति यह वाक्य अटल है, प्रकाशमान है यदितू उन्नति चाहता है तो एतदनकूल प्रचारकर। अन्यथा इस वृद्ध भारत की वर्ण व्यवस्था को मिट कर उसे ईसाई और विधर्मी होने से बचा। तेरी इन बातों से मुझे भय होरहा है कितू भारतीयप्रवेश में कोई विधर्मी ही तो नहीं है बधिक! इस प्रकार वर्णों को व्यवस्था को अवैदिक सिद्ध करते हुये, स्वयं अवैदिक सिद्ध होगये।

अंक लेत ना तरैया को।

साजिक अनूप रुप भानुजा नहान चलीं, प्यारी वृज बाम संग लीन्हे हैं कन्हैया को।
घूम घूम कौतुक बिलोकि रहीं बार बार, चूम चूम मंजु मुख लेती हैं बलैया को॥
प्रेम में निमग्न लखि प्यारी वृज नारिन को, कहत रहस्य धन्य नन्द जू के छैया को।
छिपै लगे कान्ह राधिका को बनि ऐसे जिमि, डूबत मयंक अंक लेतना तरैया को॥ 'अमर'

समस्या-पूर्तियां।

कदम्ब तरु डारनमें।

सूख गये ताल अरु तलैया कुवां कई एक, पानी न दिखावे नेकु नारन की धारन में।
धान मुरझाने बिन पाये पानी हाय! प्रभु माला सरकावें कई खेतन की पारन में॥
गये साल गश्त भये गिरुवा से गेहूं चना, याते पुष्ट दानों ढूंढ़े मिले न बजारन में।
'उमा' भगवान भी भुलाके सुध भारत की, झूल रहे झूला हैं कदम्ब तरु डारन में॥

उमाप्रसाद अवस्थी कैमोरी

चाहता नहीं हूं प्रभो! स्वर्ग का सु-राज मिलै, बैठिके विहार करूं सुर-पति बागन मैं।
चाहता नहीं हूं सुर-तरु का बनूं मैं पुष्प, कलित कलोल करूं सुर-तिय-हारन मैं॥
'मोहन' समाधि साध ध्यान में मगन होके बैठूं नहीं नाथ! जाय कंदर-पहारन मैं
कामना यही है मुख-चन्द का चकोरबनूं, देखा करूं बैठिके कदंब तरू डारन मैं॥

बा० भू० सिंघई मोहन चन्द जैन कैमोरी सी० पी०

यह सुरत विहित मम हृदय, कभी भावों से भी जागा।
सदा कीच में घुसा रहा, पर कभी दूर नहिं भागा॥
गम्भीरता को नमस्कार कर, उच्छृङ्खलता को अपनाया।
निर्मल शुद्ध पवित्र विशुद्ध भाव, को इसने सदा भगाया॥
विविध कार्य नाना साजों, में फंसा सदा ही रहता।
कपट, कुचाल, लूट मार से, कभी नहीं है थकता॥
सरसञ्ज न होगा यह जब तक, इस जन्म कलुष के हारन में।
विदित न होगा, कौन छिपा है, कभी कदम्ब तरू डारन में॥

मक्खनलाल पांडेय मारिस कालेज (नागपुर)

'रामगती' सावन की जैसी सुखदाई छटा-तैसी मन भाई मजा शीतल बयारन में।
हरे वन बाग सब हरी हरी भूमि भई-छाई हरियारी ए सी बरसा बहारन में॥
घेरे घन कारे झीनी झीनी सी फुहारें परें-तैसी ही बहारें पिक दादुर पुकारन में।
ऐसे समैं श्याम-श्यामा झूलत हिंडोले डारि-कूल पै कलिंदी के कदम्ब-तरुडारन में॥

(र०—रामगती काव्य-भूषण हिन्दी रत्न बेलघाट-गोरखपुर)

पावस प्रमोद प्रिये पुह्मी पे पाल पाल; प्रेम पुंज कुंज कुंज कालिन्दी कछारन में।
भनत 'शिबेन्द्र' है ब्रजेन्द्र की दोहाई तहां; हरे हरे बन बाग बिदित बिहारन में॥
षोजत हैं मोर पंख खोलत किलोल करैं; त्रिबिध पवन प्रीति प्रबल पसारन में।
बाधा कछु नाहीं राधा सुखमा अगाधा तहां; झूला चलु झूलिये कदम्ब तरु डारन में
—शिबेन्द्र चित्रकूट नरेश

पूरन पुनीत ब्रज भूम धूम भक्तन की, यमुना की रेती जल लहर सिवारन में।
शारदरसेन्द्र भक्ति केन्द्र है ब्रजेन्द्र रचो; कुंजन में गुंजत मलिन्द पुष्प हारन में॥
कोकिल पपही कीर दादुर मयूर झिल्लीं; झनकार बारिद के बिमल फुहारन मे।
जहां देखो मोहन को मन मोहनो है चित्र; पात पात पंकज कदम्ब तरु डारन मे॥
—शारदरसेन्द्र चित्रकूट

सुंदर सजाय साज चले दोऊ राधा कृष्ण; गोपि ग्वाल बाल संग जमुन कछारन मे।
डाले गल बांहा मंद २ मृदु हासनते; मोद भरे गावे गीत कजली मलारन मे॥
कोई लिये बीन कोई सारंगी सितार कोई; कोई न्टत्य करैं हम जोतिन कतारन में।
झूमि झूमि झुकि झुकि झूलन झुलावे कोई; झूले यालं सुंदर कदम्ब तरु डारन मे॥
जाके भेद भावन को बेदहू न पावे पार; रसना थकि जात जाकी कीरति उचारन में।
गावत महेश औ गणेश शक्ति ब्रह्मादिक; जाकी कृपा शेष मे समर्थ धरा धारन में॥
"रामद्याल" सेवे जाहि किन्नर नर देव सदा, रहें पाक शासन अनुशासन संवारन में।
चाह गहि राधे कुंज लावती सखीन मध्य; झूला झूले बांध के कदब तरु डारन में॥
—दीवान राम दयाल श्री वास्तव्य—

गइयन को छोरि औ बछइन को छोरि हरि ग्वाल बाल; टेर कै जात लै हारन में।
प्रेम सों चरावें कहूं जान ना पावैं मंजु ग्वाल बांधि चरती हैं कलन्द्री कछारन में
बंसी बजावैं तान प्रम से सुनावैं महा मोद उपजावै दिन बीतत बहारन में।
झूला डारि झूलैं नाना भाति खेल खेलैं कबों बैठें चढ़ि जाय कैं कदम्ब तरु डारन में॥
महाबीर नाई—टेढा—बनाव—

आवत रितुराज के उदासी भै वियोगिनि के नानी ऐसी मरि गै मसन की बारन में।
राति भरि देंह मांहि झिगी सी लगावति रहैं शीत के मारे अब छुपे बैठि आरन में।
खटमल काटि काटि आग सी लगावा करैं खोऊ घुसि बैठे जाय चूर के दरारन में।

भनै ब्रह्मादीन नव दल फूल फल पाय दूनी दुति आई है कदम्ब तरु डारन में ॥

ब्रह्मादीन नाई—टेढा- बनाव—

चिन्मय ! निष्प्रभ ! पूर्ण काम प्रभु ; छवि निरखें हर बारन में।
बन घोर घटा—घन की लख के आश्रय - लेवें गिरि - द्वारन में ॥
ग्वाल बाल प्रभु जाय बसे सँग; कुंजन केलि कछारन में ।
लेकर- चीर दुराय रहें सखि; श्याम ! कदम तरु डारन में ॥

सा० भू० रामप्रसाद शर्मा छीपाबड़ (सी० पी०)

कंस को पछार्यो बकासुरहिं मसर डार्यो; पुतना को प्राण हन्यो खींचि २ बारन में ।
धेनुहिं चराई जाय नन्दन निकुञ्ज माँझ; साँझ औ सबेरे श्याम खेलत हैं ग्वारन में ॥
बाँसुरी बजाय मन मोह लियो मोहन ने; भूले वृज बासी भान बसन सम्भारन में ।
चीर सब गोपिन के हँसत चुराय लीन्हें; चट लट काये हैं कदम्ब तरु डारन में ॥

—साहित्यालंकार ',वाणी भूषण" किशोरीलाल गुप्त विशारद

वृन्दावन गोकुल नन्द गाँव बरसाने माहि ढूँढि चुके तुमको सुफलित कछारन में ।
कानन में कुंजन मे वृक्षन के पुंजन मे हेरि हारे पै न मिले यमुना कछारन में ॥
जानै कौन चूक परी भारत निवासिन से करते वृजेश जासे देर दुख हारन में ।
आये घन श्याम आ सुनाओ घन श्याम फिर मंजु तान बैठ के कदम्ब तरु डारन में ॥

—बल्देवप्रसाद श्रीवास्तव

ऐरे-नर-मूढ़ काहे भ्रमता प्रपंचन में, मन को रमाता किन वृज की बहारन में ।
यमुना--नहान-ध्यान गान गुण गोविंद का, आनंद महान मिलै संतन कतारन में ॥
सेवा कुंज पुंज मंजु वृन्दावन वीथिन की, मोद कबिलाल देव रहस निहारन में ।
धेनु गोपि ग्वारन, करील औ कछारन में, आभा लखै कृष्ण की कदम्ब तरु डारन में ॥

—पुत्तीलाल शुक्ल बिलासपुर

गमन किया था सन अट्ठवीस मथुरा में; हो रही सफाई थी गली २ दुआरन में ।
कालित सुहावना गोपाष्टमी का दिवस था; भीड़ ही भीड़ थी अनेकन कतारन में ॥
रात्रि की बहार मात करती इन्द्रावती को; विद्युत प्रकाश था घर २ द्वारन में ।
कालिन्दी के तट भाँति २ के लगे थे वृक्ष; विकसे थे फुल्ल हू कदम्ब तरु डारन में ॥

ठा० कुमुद सिंह वर्मा मलहार

करके बहाना 'मैया! गैयाँ मैं चराने जाऊं, गोपियों को छेड़वे पकर के बज़ारन में ।
दूध दहो लूटते मरोरते कमल-कर-, बांसुरी बजाते कभी बैठ गुलज़ारन में ॥
ओढ़ के कमरिया पकर कर राधिका को, नाचते हैं कृष्णचन्द्र ग्वाल-बाल-यारन में ।
खेलवे खिलाते औ रिझाते हैं ग्वालन को, झूलते कन्हैया हैं कदम्ब-तरु डारन में ॥

—विःरामस्वरूप "अमर" साहित्य-रत्न

उमड़ि घुमड़ि घन नभ में दिखाई रहे, झम झम झड़ी लागिगै छिटकारिन में ।
मोरहू मज़ाये शोर दादुर सुनावैं धुनि, चपला चमकि जात सुन्दर पहारन में ॥
दमकि दमिक अब दामिनी दिखावैं दीप, वेली अल बेली औ नवेली हैं बहारन में ।
"योगी" भनैं सावन सुहावन हिंडोलन में, झूलि रहीं झूला हैं कदम्ब तरु डारन में ॥

—पं० शँकठाप्रसाद बाजपेई "योगी" सकरेली (सी०पी०)

—+—

हिंडोलेपै ।

द्रग लखि मृगहू लुकाने सकुचाने फिरैं, मन्द द्युति इन्दु छोट घूंघुट के खोले पै ।
दाड़िम सी सोहि रही सुन्दर रदन पंक्ति, कोकिल विकल हुई मंजु बन बोले पै ॥
मंजु गोल गाल अरविन्द के समान लखि, धावत मलिन्द कवि शेष रूप भोले पै ।
सावन मे झूले किसी हेम के हिंडोले माहिं, झूल रही जौन अब मैन के हिंडोले पै ॥

—वल्देवप्रसाद श्रीवास्तव शेष परौरी उन्नाव

पहो घन श्याम देखो घन श्याम छाय आई, गोपिन की टोली जुरी आई है किलोले पै ।
भनत शिवेन्द्र, वहां सुन्दर कदम्ब तरु, डारन पै झूला घले अमल अमोलन पै ॥
रिम झिम बरसत नीर हैं मयूर नाचे, महा मोद माचे सांचे पवन झकोले पै ।
बृज रानी को संदेश लाई मैं बृजेश सुनो, आज चलि झूलिये सो चन्दी के हिंडोले पै ॥

—शिवेन्द्रजी चित्रकूट नरेश

प्रेम तरु डार पर डोर डार प्रीति की सो, नैन पूतरी की पीढ़ी बांधी है निचोले पै ।
'शारदरसेन्द्र' त्यों पलक तकिया लगाय, स्वेत श्याम रतनारी झालर स्व गोले पै ॥
भक्ति-आश अभिलास श्रुतिशब्द सखी चारू, ठाढ़ी है झुलाइवे को आनद झकोले पै ।
प्यारे मनमोहन हृदै विहारी घन श्याम, आवो-बठो झूले मम बिमल हिंडोले पै ॥

—शारद रसेन्द्र

'रासगती' कारी सारी घन अँधियारी लखे- भुँइ-हरियारी, हरी कंचुकी अमोले पै ।
भूषन नगन जगमग होत जुगुनू से- दामिनि दिखाति हँसि नेक मुँह खोले पै ।।
झूलन के झोंके सो तो पौन पुरवइया मनो- बरसा सुधा की होति मंजु मृदु बोले पै ।
गावति मलार सोई पिक की पुकार आज-पावस सी राधा बनि झूलति हिंडोले पै ।।
कीरति किशोरी चली साजि तन कारी सारी--करति मलार मंद, मंद मंद डोले पै ।
आई बैठि झूले पै उँमगि यों मालव गाई- पिक शरमाई सुर मधुर अमोले पै ।।
आयो मदुराई त्यों ही पट सों दुराई मुख--मानो घिरि आई घटा पूर्ण चन्द गोले पै ।
लागे हैं मनावन पुनि गावन को 'रासगती'-लाज सों हिलो न रही चित्र सी हिंडोले पै ।।

--रासगती काव्य—भू०पू० हिन्दी रत्न बेलघाट गोरखपुर)

मत्त गजराज मृगराज हू मदोनमत्त, क्रुद्ध यमराज अग्नि ज्वलित अतोले पै !
विष प्राणहारी शेष-फन दुःख कारी तीव्र, होते भयकारी नहीं वाम गति डोले पै ।।
विषय विलास कामिनी का सहवास पाय, मानता है मोद जो अनग रंग घोले पै ।
भोगता है त्रास पाता दुर्गति मे वास अब, झूलता है प्राणी काम--केलि-के हिंडोले पै ।।

का० भू० सिघई मोहनचन्द जैन कैमारी सी० पी०

सावन मास सुहावन है सखी ! आये नहीं अबलों नन्दलाला ।
बिजली चमके बरसे घन घोर न देख परे कहूँ नैक उजाला ।।
डरपे जियरा पिय के बिन मोर मचावत शोर करें दृग लाला ।
पपिहा पिउ पीऊ पुकार करे सो जरावत है जियरा मतवाला ।।
सोच न कर चल संग मेरे हूँ मतवारी जिस भोले पे ।।
कुंजन-वन मे देख सखी ! वे झूलत श्याम हिंडोले पे । —अमर तालबेहट;

झूला—झूलेंगे श्याम ! हिंडोले पे ।

कदँब की डारन झूला बांधो झूलेंगे श्याम ! हिंडोले पे ।
अगर चँदन को है झूलनो रेशम डोर बिछौने पे ।।
ग्वाल बाल सँग झूला झूले मोहन रूप सलौने पे ।

झूला—झूलेंगे श्याम ! हिंडोले पे—

राधा रुकमनि झूला देवे बलि बलि बाल खिलौने पे ।
मोर मुकुट छवि निरखे नितही यशुमति मंद हिंडोले पे ।।

झूला—झूलेंगे—श्याम ! हिंडोले पे —सा०भू०रामप्रसाद शर्मा

श्रीमान् पं० कर्णवीरनागेश्वररावजी को पण्डित प्रवीण,, की उपाधि।

१५।७।४१ को "दान कर्ण" श्रीयुत आगर्लमूडि कुप्पुस्वामी (भूस्वामी) जी के सभापतित्व में श्रीऽस्तु देशीय वैद्य पाठशाला चीराला का प्रमाण पत्र वितरणोत्सव सुसंपन्न हुआ। उक्त पाठशाला के अभ्युदय के प्रति पंडित कर्णवीर ने जो अधिक परिश्रम किया वह वर्णनातीत है।

उक्त पाठशाला में श्रीकर्णवीर ने भी हिन्दी तथा संस्कृत पढ़ानेका भार अपने ऊपर ले लिया। दो मास की अवधि में हिन्दी तथा संस्कृत विद्यार्थियों ने सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लिया। आधुनिक शिक्षण के अनुसार ही यहां का अध्ययन हुआ है। विद्यार्थी गण बड़े चाव से हिन्दी तथा संस्कृत सीखनेलगे हिन्दी तथा संस्कृत सीखने में किसीने कुछ भी डर नहीं खाया यहां तो पाठ्य पुस्तक श्रीमान से लिखित "त्रि भाषा बोधिनी' ही है।

अधुना वीरनागेश्वर राव जी से आंध्र संस्कृत हिन्दी भाषाओं मे जो प्रचार हो रहा है। उसकी मुक्त कंठ से बड़ी प्रशंसा की गई हैं। आंध्रराष्ट्र संस्कृत प्रचार संघ के प्रति पंडितजी के अभिप्राय से सबके सब सहमत है। भेद भाव किसी के हृदय में नहीं दीख पड़ता। संस्कृत प्रचार संघ भी चीराला (चीरपुरी) में ही स्थापित कराने के लिये पंडितजी से प्रार्थना की गई है। नागेश्वर जी की सेवा की प्रशंसा करते एक सम्मान पत्र भी हिन्दी भाषा मे समर्पित किया गया है जिस की प्रति लिपि हम नीचे देरहे हैं। सम्मान पत्र की लिपि तो तेलुगू है।

'पंचभाषी त्रिभाषाप्रवीन संस्कृत मनीषी, सहित्यशिरोमणि व्याख्यानवाचस्पति, प्रबंध कलानिधि, हिन्दी प्रचारक पंडित प्रवीणादि विविध बिरूद विराजित ब्रह्म श्री श्रीयुत पंडित, कर्णवीर नागेश्वर राव जी की शुभ सेवा में समर्पित।

सम्मान पत्र।

लेखकः—श्रीमान् मुडंपदोड्डयाचार्युलु प्रि० सम्मस्कूल आफ् इंडियनमेडिसिन चीराला

पूज्य पंडित जी !

आज हम अपने को धन्य समझते हैं। जिससे आपकोयह सम्मानपत्र देनेका सौभाग्य मिला। आंध्र प्रांत मे ही नहीं वरना सारे भारतवर्ष मे आप सुप्रसिद्ध पंडित प्रकांड समझे जाते हैं। इसके लिये आप की रची हुई वाणी–निबंध मणिमाला त्रि भषा बोधिनी आदि उत्तमोतम ग्रंथ ही साक्षी भूत हं।

हे देशीय विद्याभमानी !

आज इस चीरपुरी (चीराला) स्थ श्रीऽस्तु वैद्य पाठशाला रूपी रथ का कृष्ण सारथ्य करके जय श्री प्रदान करने का पूर्ण श्रेय आप ही का है। राष्ट्रभाषा हिन्दी आपकी वाणी है। संस्कृत तथा आंध्र आप की वशवर्तिनी सर्वालंकार भूषितसुंदरियां हैं।

समर्थ प्रचारकाग्रणी !

यह आंध्रदेश का भाग्य है कि आप

"अखिलभारतीय संस्कृत प्रचार समिति" "अयोध्या" से आह्वानित हुये हैं। यही आप की दिगंत कीर्ति का उदाहरण है। आप की यह असामान्य सेवा से चोराला ही नहीं, वरना सारा आंध्र देश धन्य हो गया है। आपकी सुगुण संपत्ति, कार्य दीक्षा, और पंच भाषा पांडित्य आसामान्य लौकिक—व्यापार दक्षता आदि सराहनीय हैं। चीरपुरी में ही आंध्र राष्ट्र संस्कृत साहित्य सम्मेलनकी स्थापना होना अत्यंतावश्यक है। इस के लिये आप हीकोकर्णधारबनाकर नाव चलाने मे समर्थ मानते हैं। इसके उपलक्ष्य मे आप को "पंडित प्रवीण" सनद देते हम अपने को धन्य समझते हैं।

देशप्रेमी !

आप से भविष्य काल मे भी अगणित उत्तम कार्य सुसंपन्न होने वाले हैं। अखिल भारत तथा लोक की ख्याति कमायेंगे सर्वशक्तिशाली भगवान् आपको आयुरारोग्यैश्वर्यादि प्रदान कर देशीय विद्या की सेवा करावें।

आपके विनीत—
पालकवर्ग तथाचीराला के और लोग।

हिन्दी विद्वत्वृत्त !

निम्नांकित सज्जनों ने ।।)भेजकर पुस्तकप्रकाशनमें सहायता पहुंचाईहै आशाहै कि अन्य लोग भी ।।) के टिकट भेजने मे विलम्ब नकरेंगे

राजकुमार उपाध्याय "कुश" पीढो
रामचन्द्र गौड तराना
सूर्यभान गौड खुर्जा
शिवनारायण उपाध्याय कायथा
मोहनचन्द्र जैन कैमारा
रामप्रसाद शर्मा छीपाबाड
ललित शर्मा चांदौद
शिवशंकर शुक्ल बिलासपुर
बांकेबिहारी प्र० आगरा
महावीर नाऊ टेडा

निम्नांकित सज्जनो ने नवीन योजना के अनुसार दो दो रुपये भेजाहै हि० वि० व्र० जिन्हें बिना मूल्य भेजा जायगा।

बंशीधर चांडक सोलापूर
हरिमोहन मिश्र शाह आलमनगर

हिन्दी विद्वत्परिचय छपना प्रारम्भ हो चुकाहै जिन सज्जनों की नामावली गत अंक में छप चुकीहैं, उनके अतिरिक्त शारदाके अन्य ग्राहकों को भी जीवनियां प्राप्त नहींहै। अतः शारदा के ग्राहकजन जिनमे अधिकतर साहित्य सेवक ही है अपना अपना पूर्ण परिचय ।।)के टिकटों समेत शीघ्र भेजने की कृपा करें। जिन महानुभावों के नाम गताङ्क मे प्रकाशित हो चुके हैं उनमे भी जिन लोगों ने अबतक पुस्तक की ग्राहकतार्थ ।।)के टिकट नहीं भेजे वे भी शीघ्र ही भेजे। वि०व्र० का कार्य प्रारम्भ हो चुका है निम्नांकित सज्जनों का जीवनवृत्त भी प्रकाशित होगा—

राजवैद्य—राधाकृष्ण मिश्र सतबरवा पलामू
शम्भूनाथ शा० लखीमपुर
गणपतलाल शा० औरंगाबाद
लक्ष्मीकांत झा चौमथ
श्यामलाल शर्मा खनियाधाना
निर्मलादेवी सागर (टाइटलपृ०२ परदेखिये)